शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/7008 ISSN No. 2456-625 X

वर्ष 2 अंक 8 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 अक्तूबर 2018

मुख्य संपादक
डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक
डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक
प्रो.सती.के
डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा
श्रीमती वनजा.पी

संपादक मंडल
प्रो.एस.कमलम्मा
डॉ.जी.गीताकुमारी
डॉ.गिरिजा.डी
डॉ.बिन्दु.सी.आर
डॉ.षीना.यू.एस
डॉ.सुमा.आई
डॉ.एलिसबत्त जोर्ज
डॉ.लक्ष्मी.एस.एस
डॉ.धन्या.एल
डॉ.कमलानाथ.एन.एम
डॉ.अश्वती.जी.आर

सूचना : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। उनसे संपादक तथा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय		3
11वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन	: डॉ.पी.लता	10
सही उत्तर चुनें		21
हिन्दी विश्व : विकास की दिशाएँ	: डॉ.सुमा.आई	22
भूमण्डलीकरण और सूर्यबाला की कहानियाँ	: डॉ.उषा.बी नायर	25
असंगघोष की कविता दलित प्रतिरोध के नए तेवर	: डॉ.जयकृष्णन. जे	30
'कथा एक कंस की' नाटक में अभिव्यक्त संवेदनात्मक त्रासदी	: डॉ. जयश्री ओ	35
सिक्किम की यात्रा	: डॉ.शीबा शरत.एस	39
डॉ. जी. गोपिनाथन की अनूदित रचनाएँ	: विष्णु.आर.एस	43
श्रद्धांजली : अटल बिहारी वाजपेयी	: डॉ.पी.लता	44
श्रद्धांजली : डॉ.आर.एस.रामचन्द्रन नायर		45
विश्व हिन्दी सम्मान विजेता (केरल)		47
भारत भारती के समर्पित हिन्दी साधक (पुस्तक परिचय)	: डॉ.पी.लता	48

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मैलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ डी.वी.सुरेख ई.एन फोण्ट में वर्ड या पेजमेकर फाइल में भेजें। रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता भी अंकित करें। संक्षिप्त जीवन-परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक

डॉ.पी.लता

शोध सरोवर पत्रिका

मूल्य :	एक प्रति रु. 30/-
	वार्षिक शुल्क रु.120/-

पत्रिका के संबंध में अधिक जानकारी केलिए संपर्क करें - डॉ.पी.लता (संपादक, शोध सरोवर पत्रिका; मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी), आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ओफीस लेन, ई-28, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य। फोन : 0471 - 2332468, 9946253648

ई-मेल : akhilbharatheeyhindiacademy@gmail.com

संपादकीय

विश्व भाषा हिन्दी और भारतीय संस्कृति

मूल भारतीय संस्कृतिः-

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है। समय की गति के अनुसार उसका बाह्य रूप बदलता है, पर मूल रूप वैसा ही रहता है। यों भारत देश की भी अपनी अमर संस्कृति है। वेद, पुराण आदि मूल भारतीय संस्कृति के प्रकट रूप हैं। विश्व की चार प्राचीनतम संस्कृतियों - मेसोपोटमिया, मिस्र, चीन और भारतीय-में से एक है 'भारतीय संस्कृति'। वैदिक भाषा के विकास के साथ उद्भूत संस्कृत, पाली तथा प्राकृत भाषाओं के साथ मूल भारतीय संस्कृति में वैदिक संस्कृति, बौद्ध संस्कृति और जैन संस्कृति अंतर्प्रवाहित हुईं। कई विदेश शक्तियों का प्रभाव काफी लंबे समय तक भारत में रहा। अतः उनकी संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति में सहज ही मिल गयी हैं। अतः भारतीय संस्कृति अनर्गल प्रवाहित है और कई संस्कृतियों का समुच्चय भी है। सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी, वैदिक युग में विकसित हुई और बाद में फूली - फली 'भारतीय संस्कृति' की प्रमुख विशेषताएँ हैं - विविधता में एकता, सामासिक संस्कृति, धर्म पालन को सबसे बड़ा आदर्श मानना, 'वसुधैव कुटुम्बकम' की कल्पना को सार्थक करनेवाले सामान्य धर्मों ('अस्तेय' यानी 'चोरी न करना',अक्रोध, सहिष्णुता, आहिंसा, 'भूत हितत्व' यानी 'सभी प्राणियों का हित करना', 'शौच' यानी 'शुद्धि' आदि) का पालन करना, नारी की दैविक स्थिति, मानवतावाद, अतिथि सत्कार, अपरिग्रह यानी 'ज़रूरत से अधिक चीज़ें इकट्ठा न करना', सदाचार, ज्ञान को महत्व देना, विचार-स्वातंत्र्य आदि।

भारतीय संस्कृति में परिवर्तनीशलताः- इस उत्तराधुनिक युग में वे सारे कार्य यंत्र करते हैं जो पहले मनुष्य अपने हाथ से करते थे। इससे समय की बचत होती है और स्थानों की दूरी भी महसूस नहीं होती। नव इलेक्ट्रोनिक माध्यमों - कंप्यूटर, कंप्यूटर के अनुप्रयोग (ई-मेल, इंटरनेट, वाई-फाई तकनीक, फेस बुक आदि), मोबाइल फोन (फोन पर बातचीत ही नहीं इंटरनेट, एस.एम.एस, वाट्स आप आदि की भी सुविधाएँ हैं) आदि - के आविष्कारों के परिणामस्वरूप भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कल्पना साकार हो गयी है। संप्रेषण के इन माध्यमों के ज़रिए तत्क्षण सूचनाओं का आदान - प्रदान ही नहीं, देशों के बीच सांस्कृतिक आदान - प्रदान भी होता है। प्रत्येक देश के किसी

भी परिवर्तन की सूचना उसी क्षण दुसरों को मिलती रहती है। अनुकरणशीलता के कारण वर्तमान युग के मनुष्य नये को अपनाते हैं। आज भारतीयों की जीवन-शैली पुराने से ज़्यादा बदल गयी है, खासकर वेशभूषा, खान - पान, भाषा आदि में अंग्रेज़ी का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। भारतीय नवीनतम वेश धारणकर सभाओं में जाते हैं, विदेशियों से बिना हिचक के अंग्रेज़ी बोलते हैं तथा स्त्री - पुरुष विदेशों में काम करते हैं।

अंग्रेज़ी का प्रभावः- भारत बहुभाषा भाषी देश होते हुए भी अंग्रेज़ों के शासन काल में मेकाले प्रभु ने भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा पर ज़ोर दिया। शनैः शनैः भारत में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग व्यापक होते रहने से भारतीय भाषाओं की स्थिति गौण हुई। कोन्वेंट स्कूल शिक्षा प्राप्त भारतीय अंग्रेज़ी को अधिक पसंद करने लगे। भारत के बुद्धिजीवी वर्ग ने अंग्रेज़ी को मनसा स्वीकारा है। यही नहीं, भारत के जन साधारण को भी अंग्रेज़ी भाषा प्रिय है। शिक्षा, वाणिज्य, संचार माध्यम, कार्यालयीन कामकाज जैसे विविध क्षेत्रों में अंग्रेज़ी का ज्ञान अनिवार्य बन गया है। भारत में सर्वाधिक प्रचलित भाषा हिन्दी 14 सितंबर 1949 को भारत की राजभाषा स्वीकृत हुई। उसके इतने वर्षों बाद भी केवल 'क क्षेत्र' (हिन्दी क्षेत्र) के कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज होता है। इन कार्यालयों में द्विभाषिक नीति होने के कारण अंग्रेज़ी के समानांतर हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के निर्माण केलिए सन् 1961 में 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' का गठन हुआ। इस आयोग के द्वारा ग्रहण, अनुकूलन, संचयन तथा निर्माण पद्धतियों द्वारा प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में ज़रूरी 'हिन्दी पारिभाषिक शब्द' बनाये जा रहे हैं। आज हिन्दी विविध कार्यक्षेत्रों में अपने को समर्थ सिद्ध कर रही है। प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी भाषा ने शनैः शनैः विदेशियों को प्रभावित किया है।

हिन्दी का अमरत्वः

राष्ट्र की संस्कृति और भाषा के अन्योन्याश्रित संबंध राष्ट्रीय एकता की आधारशिला बनता है। भारत में अधिक लोगों के समझने की भाषा है हिन्दी। वह राष्ट्रीय प्रयोजन की भाषा है। भारतीय संविधान में 'राजभाषा' का पद प्राप्त होने से नहीं, बल्कि 'साहित्य भाषा' बनने से हिन्दी भाषा अमर बनी है। कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, प्रेमचन्द, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रा नंदन पंत, जयशंकर प्रसाद जैसे हिन्दी रचनाकारों की रचनाएँ अनश्वर ही रहेंगी। मूल भारतीय संस्कृति को समझने केलिए तुलसीदास की रचना 'रामचरित मानस' उत्तम है जिसका देशी - विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। करीब सत्तर साल पहले जापान के भाषा विद्वान प्रो. वायवो दोई ने भारत के प्रयाग विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए तथा पी.एच.डी की उपाधियाँ प्राप्त कीं और 'भारतीय कृषक जीवन का महाकाव्य' विशेषणवाले प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास का अनुवाद जापानी में किया।

"हिन्दी ज्ञान मेरेलिए अमृत पान है, जितनी बार उसे पीता हूँ, उतनी बार लगता है पुनः जीता हूँ।" -यह वाक्य किसी भारतीय का नहीं, वरन् एक प्रमुख भाषाविद् चेक नागरिक डॉ. ओदेलोन स्मेकल का है, जो भारत के पूर्व राजदूत रहे। हिन्दी में उनकी 12 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। हिन्दी की कई प्रतिनिधि रचनाओं का विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। साहित्य रचनाओं के अनुवादों के ज़रिए सहज रूप से सांस्कृतिक आदान - प्रदान भी होता है।

हिन्दीः राष्ट्रीय एकता की भाषाः- उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के फलस्वरूप पूरा विश्व उपभोक्तावादी भौतिक व्यावसायिक व्यवस्था से प्रेरित है। प्रत्येक राष्ट्र में विज्ञान और तकनीकी विकास होने के साथ ही साथ औद्योगीकरण का अति प्रसार हुआ है। वर्तमान युग में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास, संगणकीय क्रांति, संचार के विस्तार तथा विश्व वाणिज्य के आधिपत्य के कारण अंग्रेज़ी की जड़ें प्रबल हो गयी हैं। वैश्वीकरण के फलस्वरूप उद्भूत नवीन अर्थ व्यवस्था में अंग्रेज़ी ने अपना स्थान जमाया है। भारतीय बाज़ारों में तकनीकी वर्चस्वता से इंटरनेट व ई-मेल द्वारा हिन्दी माध्यम से भी सूचनाओं का आदान - प्रदान होता है। विश्व बाज़ार की प्रबल भाषा के रूप में अंग्रेज़ी प्रतिष्ठित हो गयी है। अतः भारतीयों को अंग्रेज़ी का ज्ञान ज़रूरी है। साथ ही साथ निज भाषाओं-राष्ट्रभाषा हिन्दी और प्रादेशिक भाषा/राज्य भाषा - का ज्ञान भी ज़रूरी है। भारत में सर्वाधिक प्रचलित भाषा हिन्दी विभिन्न भाषा भाषी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधनेवाली कड़ी है।

हिन्दी : विश्व भाषाः- युनेस्को के एक सर्वेक्षण के अनुसार सबसे बड़ी विश्व भाषाएँ तीन हैं - मंडारिन (चीनी), हिन्दी और अंग्रेज़ी। चीनी सबसे बड़ी विश्व भाषा है, यह निर्विवाद है। दूसरी बड़ी भाषा को लेकर विवाद चलता है। खड़ीबोली हिन्दी की शैलियों, यानी 'उर्दू' , 'हिन्दुस्तानी' और 'दक्खिनी' को बोलनेवालों को भी मिलाने से तो हिन्दी का स्थान दूसरा है। रोज़ी - रोटी केलिए भारत से विदेश गये भारतीय अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति को भी ले गये। इस प्रकार मॉरीशस, गुयाना, ट्रिनिडाड, फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, टोबैगो जैसे देशों में हिन्दी पहुँच गयी।

किसी भी भाषा का विश्व भाषा के रूप में मूल्यांकन करने केलिए विश्व स्तर पर उसका उपयोग कैसे होता है? कहाँ - कहाँ होता है? - इन बातों पर ध्यान देना है। विश्व भाषा हिन्दी का विदेशों में उपयोग बढ़ता जाता है। पूरे विश्व में कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन चलता है। टोकियो विश्वविद्यालय (जापान) के 'यूनिवर्सिटी ऑफ फोरिन स्टडीस' के हिन्दी प्राध्यापक सुरेश ऋतुपर्ण के शब्दों में "भारत में हिन्दी राजनीतिक दुरभिसंधि का शिकार है, लेकिन विदेशों में भारत को समझने केलिए हिन्दी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है।" (पृ.सं. 247, देश - विदेश में हिन्दी,

प्रकाशक- अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कलामंच, मुरादाबाद, भारत)। जे.सी. करपेंटर ने यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से 'तुलसीदास का धर्म दर्शन' विषयक शोध कार्य को पहली डी.लिट उपाधि हासिल की। हिन्दी का सबसे बड़ा प्रामाणिक व्याकरण पादरी सैमुअल के.लॉग ने लिखा। भारतीय भाषाओं का पहला इतिहास जॉन अब्रहाम ग्रियेर्सन ने लिखा। स्टीनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक लिंडा हेंस ने कबीर के 'बीजक' पर पुस्तक लिखी। अमरीका में प्रतिवर्ष 'हिन्दी महोत्सव' मनाया जाता है, जो हिन्दी और भारतीय संस्कृति को ज़िन्दा रखनेवाला कार्यक्रम है। वहाँ का 'विश्व हिन्दी न्यास' हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में हिन्दी फिल्मों का योगदान महत्वपूर्ण है। विदेशी नागरिकों का हिन्दी फिल्मों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है और वे बड़े चाव के हिन्दी फिल्म देखते हैं और हिन्दी फिल्म गान गुनगुनाते हैं।

विदेशों में हिन्दी पढ़ानेवाले विश्वविद्यालय कई हैं। उनमें 45 विश्वविद्यालय- कालिफोर्निया, शिकागो, टेक्स, कोलंबिया आदि प्रमुख विश्वविद्यालयों को भी मिलाकर - सर्वाधिक विकसित राष्ट्र अमरीका में स्थित हैं। टेक्सास प्रांत ने हाइस्कूल के छात्रों केलिए 480 पृष्ठों की पाठ्य पुस्तक 'नमस्ते' तैयार की है। भारतीय मूल के शिक्षक श्री अरुण प्रकाश ने यह पुस्तक तैयार की है। अमरीका में 'सेंट्रल लाइब्रेरी' में 'हिन्दी भाषा अनुभाग' खुला है। यों विदेशी ग्रंथालयों में हिन्दी पुस्तकें उपलब्ध होने से दो संस्कृतियों का मिलन सहज ही होता है। कई अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है। अमरीका में 'पूरवाई', 'उन्मेष', 'हिन्दी जगत्' आदि हिन्दी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। कोरिया के टोराण्टो नामक प्रसिद्ध नगर से 'संगम' नाम से एक पत्र और 'संवाद' नाम से एक मासिक पत्रिका हिन्दी में निकलती हैं। कानड़ा में 'भारती', 'संवाद' आदि पत्रिकाएँ निकलती हैं। न्यूयोर्क में संपन्न आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री बान की मून ने अपना संबोधन भाषण हिन्दी में दिया था।

चीन में हिन्दी का प्रचार व्यापक रूप से हुआ है। चीनी यात्री ब्हेनसांग और फाहयान गुप्त काल में भारत आये थे और उन्होंने यहाँ के साहित्य और संस्कृति के बारे में लिखा।

गिरमिटिया देशों में हिन्दी :

प्रवासी भारतीयों के अलावा भी हिन्दी बोलनेवाले भारत वंशी विदेशों में रहते हैं। ऐसे विदेश हैं- मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, ट्रिनिडाड-टुबैगो आदि। गिरमिटिया प्रथा के अंतर्गत यूरोपीय भारतीयों को मज़दूर बनाकर विदेशों में ले गये, जिन्हें यहाँ पाँच वर्ष तक तन तोड़ मेहनत करनी थी। फिर चाहें तो वे स्वदेश लौट आ सकते थे या वहीं बस सकते थे। किन्तु भारत लौटे बिना इन देशों में ही बसे भारतीयों में अधिकांश बिहार और उत्तरप्रदेश से गये हुए थे। ये संपर्क भाषा के

रूप में वहाँ हिन्दी का व्यवहार करते हैं।

'**मॉरीशस**' अफ्रीकी महाद्वीप के तट के दक्षिण पूर्व में 900 किलोमीटर की दूरी पर हिन्द महासागर और मेडगास्तर के पूर्व में स्थित लघु द्वीप है। यहाँ सन् 1834 में सर्वप्रथम भारतीय मज़दूर लाये गये। सन् 1968 में मॉरीशस ब्रिटीश दासता से मुक्त हो गया और सन् 1992 में एक गणतंत्र बना। भारत से मॉरीशस आये मज़दूर प्रमुख रूप से भोजपुरी (भाषा), 'रामचरितमानस', 'हनुमान चालीसा' जैसे सांस्कृतिक ग्रन्थ आदि साथ लाये थे। आज यहाँ की आधिकारिक भाषा अंग्रेज़ी है। यहाँ सन् 1926 में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना 'तिलक विद्यालय' नाम से हुई। यहाँ आज प्रथम कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। यहाँ के 4 जून 2018 को स्वर्गीय हुए यशस्वी कथाकार अभिमन्यु अनत हिन्दी सेवा केलिए 'शमशेर सम्मान' से सम्मानित हुए। वे 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में मरणोपरांत 'विश्व हिन्दी सम्मान' से सम्मानित हुए। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है। मॉरीशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित उनका बहुचर्चित उपन्यास है 'लाल पसीना'। उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य की श्रीवृद्धि केलिए सराहनीय प्रयास किया। उनके पूर्वज भारत से गन्ने की खेती केलिए यहाँ लाये गये थे। विष्णु दयाल, रामदेव धुरंधर, भानुमति नादान आदि यहाँ के हिन्दी रचनाकार हैं। रामदेव धुरंधर ने भी भारतवंशी मज़दूरों का स्वर अपने उपन्यासों द्वारा दुनिया को सुनाया है। गिरमिटिया बनकर मॉरीशस आये भारतीय मज़दूरों को कई शर्तों का पालन करना पड़ा। यही नहीं, मारपीट और लाठी प्रहार सहने पड़े। कड़ी धूप में स्त्रियों को भी काम करना पड़ा। इन श्रमिकों ने अनजान द्वीप की पथरीली ऊसर भूमि को अपने अथक परिश्रम से सोना उगने योग्य, यानी उर्वर बनाया। परिणामस्वरूप आज मॉरीशस विश्व का एक समृद्ध द्वीप है। अपनी भाषा हिन्दी को बनाये रखने तथा अपने धार्मिक आचारों का पालन करने के लिए भी भारतीय मज़दूरों को यहाँ संघर्ष करना पड़ा। उपन्यासकार रामदेव धुरंधर का छः भागोंवाला बहुचर्चित उपन्यास 'पथरीला सोना' इस युगगाथा की दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है। **'सूरीनाम'** दक्षिण अमरीका महाद्वीप के उत्तर में स्थित एक देश है। यह देश पहले इंग्लैण्ड का एक उपनिवेश था और यहाँ सन् 1873 में पहली बार भारत से मज़दूर लाये गये जो प्रमुख रूप से मगही, भोजपुरी, अवधी क्षेत्रों के थे। यहाँ की पारस्परिक संपर्क भाषा हिन्दी है और हिन्दी भाषा में डच भाषा का प्रभाव है। अमरसिंह, सूर्यप्रकाश बीरे, श्रीनिवासी, जीत नारायण आदि कई हिन्दी लेखक यहाँ हैं। सूरीनाम की तरह गुयाना, ट्रिनिडाड और टुबैगो द्वीपों में भी भारतवंशी रहते हैं।

'**फिजी**' प्रशांत महासागर में 332 द्वीपों का समूह है। इनमें केवल 110 द्वीपों में लोग रहते हैं। सन् 1874 से यहाँ ब्रिटिश उपनिवेश था। सन् 1970 में विजयदशमी के दिन आज़ाद हुआ। इस दिन में यहाँ प्रथम बार हिन्दुओं ने स्वतन्त्रता दिवस

और विजयदशमी एक साथ मनायी। ऑस्ट्रेलिया के फिजी द्वीप में गन्ने की खेती केलिए सन् 1879 से 1916 तक गिरमिटिया के रूप में भोजपुरी और अवधी बोलनेवाले भारतीय मज़दूर लाये गये। सन् 1970 में फिजी स्वतंत्र हुआ। यहाँ फिजी हिन्दी / फिजियन बात भाषा में लिखनेवाले कम हैं और मानक हिन्दी का प्रयोग अधिक है। सन् 1997 के संविधान के अनुसार यहाँ तीन राजभाषाएँ हैं - अंग्रेज़ी, हिन्दी, फिजी आदि। यहाँ सन् 1936 में हिन्दी पाठशाला खोली गयी। जोगिन्दर सिंह को 'फिजी का प्रेमचन्द' माना जाता है। कमलाप्रसाद मिश्र, विवेकानन्द शर्मा आदि यहाँ हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक हैं। यहाँ से 'भारत पुत्र', 'किसान जागृति' और 'जयफीजा' हिन्दी पत्रिकाएँ निकलती हैं।

सर्वाधिक बोलनेवाली विश्व भाषाएँ :-

चीन की मंडारिन भाषा संसार में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। उर्दू और हिन्दुस्तानी (खड़ीबोली हिन्दी की शैलियाँ) बोलनेवालों को भी मिलाने से हिन्दी का स्थान दूसरा है और अंग्रेज़ी का स्थान तीसरा है। हिन्दी भाषा पूरे विश्व के भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधनेवाली कड़ी है। भूमंडलीकरण-उदारीकरण की विशेष परिस्थिति में विश्व वाणिज्य में अंग्रेज़ी की जड़ें प्रबल हैं, अतः भारतीयों को एक विदेशी संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेज़ी को मानना है। साथ ही प्रत्येक भारतीय को निज भाषाओं - राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा अपनी मातृभाषा या राज्य भाषा - का ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए। यहाँ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के शब्द स्मरणीय हैं - "बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।" भूमंडलीकरण के फलस्वरूप रोज़गार का अवसर भारत में भी बढ़ा है। भारत में रोज़गार केलिए या पर्यटन केलिए आनेवाले विदेशी यहाँ के लोगों से टूटी - फूटी हिन्दी में बोलने का प्रयास करते हैं।

हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात करने से महसूस होता है कि 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की अधिकारिक भाषा का स्थान 'हिन्दी' को मिलने और हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाओं में सातवें स्थान पर सुशोभित दिखाई देने का दिन दूर नहीं है। अब तक 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की अधिकृत भाषाएँ हैं - अरबी, चीनी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, रूसी और स्पानिश।

विज्ञापनों में हिन्दी : विज्ञापनों में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग देश - विदेश में हिन्दी का उपयोग बढ़ने का एक कारण है। आजकल जन साधारण की बढ़ती क्रय - शक्ति का लाभ उठाकर कंपनियाँ आकर्षक हिन्दी विज्ञापनों से अपने उत्पाद की ओर जन साधारण को आकर्षित करती हैं। भारत में आजकल कई बहुराष्ट्र कंपनियाँ हैं, जो हिन्दी विज्ञापनों के सहारे उत्पादों का प्रसार बढ़ाती है।

विश्व हिन्दी सम्मेलनः- भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपनी प्रिय भाषा हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा का पद दिलाना चाहा, जिससे अहिन्दी भाषी क्षेत्र 'दक्षिण भारत' में हिन्दी प्रचारार्थ 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास' (वर्तमान 'चेन्नै')

तथा भारत के अन्य हिन्दीतर प्रांतों में हिन्दी प्रचारार्थ 'राष्ट्र भाषा प्रचारक समिति, वर्धा' स्थापित हुई। 4 जुलाई 1936 को स्थापित 'राष्ट्रभाषा प्रचारकसमिति' ने सन् 1973 में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना के साकार स्वरूप 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' के आयोजन की आवश्यकता उठायी और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 - 13 जनवरी 1975 में नागपुर (भारत) में संपन्न हुआ। इस स्मृति में प्रतिवर्ष 10 जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 'राष्ट्र भाषा प्रचारक समिति' की ही माँग और प्रयास के परिणामस्वरूप भारत सरकार द्वारा 'महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' स्थापित किया गया। मॉरीशस में फरवरी 2008 में 'विश्व हिन्दी सचिवालय' की स्थापना की गयी, इसके अपने भवन का उद्घाटन मार्च 2018 में भारत के राष्ट्रपति ने किया। यहाँ से 'विश्व हिन्दी' त्रैमासिक पत्रिका भी निकलती है।

जब तक यह दुनिया रहेगी तब तक हिन्दी रहेगी और हिन्दी के साथ भारतीय संस्कृति भी अमर रहेगी। आजकल भारतीय संस्कृति की वाहक भाषा हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर चर्चा की जाती है। इस व्यापक स्थिति तक हिन्दी पहुँचने के मूल में एक नमनीय महानुभाव हैं - भारत के राष्ट्रपिता माहात्मा गाँधी। हिन्दी अपने सरल और मिलनसार भाव से पूरे विश्व को आकर्षित कर रही है। विदेश कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से विभिन्न देशों में चलाये जानेवाले 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' वैश्विक स्तर पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास केलिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रवासी भारतीयों तथा भाषा प्रेमी विदेशियों के हिन्दी के प्रति आत्मीय संबंध को और भी दृढ़ करने में 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' कामयाब बनता है। साहित्य भाषा के रूप में ही नहीं, ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में भी हिन्दी को सक्षम बनाना 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का एक उद्देश्य है।

भारत सरकार के विदेशकार्य मंत्रालय की ओर से अधिकाधिक हिन्दी पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का प्रकाशन करना, हिन्दी विभागवाले विदेशी विश्वविद्यालयों के ग्रंथालयों में भी इन्हें उपलब्ध कराना, हिन्दी विभागवाले विदेशी विश्वविद्यालयों में उपलब्ध हिन्दी रचनाओं का उन देशों की भाषाओं में अनूदित करने या कराने को वहाँ के हिन्दी अध्यापकों को प्रोत्साहन देना जैसे कार्यों से भारतीय संस्कृति की वाहक भाषा हिन्दी के द्वारा विदेशों में पवित्र भारतीय संस्कृति का प्रचार हो जाएगा।

~*~*~*

11वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

◆ डॉ.पी.लता

हिन्दी भाषा को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस और व्यापक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से तथा यह रेखांकित करने के उद्देश्य से कि हिन्दी साहित्य की भाषा ही नहीं, ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में भी अग्रसर होने में सक्षम है, 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' की संकल्प की गयी। इस संकल्पना को सन् 2018 से 43 वर्ष पूर्व सन् 1975 में नागपुर (भारत) में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में मूर्त रूप दिया गया। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आदर्श वाक्य था, 'वसुधैव कुटुम्बकम', जिसका अर्थ है 'धरती ही परिवार' है। हिन्दी भारतीयों के संस्कार की भाषा है। अतः हिन्दी बोलनेवाले तथा हिन्दी माध्यम से काम करनेवाले व्यक्तियों में सहज ही विश्व बन्धुत्व की भावना रहती है।

'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का आयोजन भारत सरकार के विदेश कार्य मंत्रालय द्वारा किया जाता है। लघु भारत कहे जानेवाले 'मॉरीशस' में 18-20 अगस्त 2018 को 11 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस सरकार (शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय, मॉरीशस सरकार) के सहयोग से चलाया गया । विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन में एक देश को सहयोगी बनाना पहली बार है। मॉरीशस अफ्रीकी महाद्वीप के तट के दक्षिण पूर्व में 900 कि. मी. की दूरी पर हिन्द महासागर में मेडगास्कर के पूर्व में स्थित लघु द्वीप है । यहाँ सन् 1834 में गिरमिटिया प्रथा/ शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत सर्वप्रथम भारतीय मज़दूर लाये गये। डच, फ्रेंच और ब्रिटीश उपनिवेश के बाद गन्ने की खेती करने लाये गये ये मज़दूर तुलसीदास के 'रामचरित मानस', 'हनुमान चालीसा' जैसे ग्रंथ भी साथ लाये थे । तन तोड़ परिश्रम करते वक्त इन लोगों में धर्म, भाषा और संस्कृति सभी का विकास हुआ। सन् 1968 में मॉरीशस देश ब्रिटीश दासता से मुक्त हुआ और सन् 1992 में एक गणतंत्र बना। आज यहाँ कई देशों के लोग रहते हैं, जिनमें

भारतीय मूल के लोगों की अधिकता है। 11 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस में चलाने का निर्णय सितंबर 2015 में भोपाल (भारत) में चलाये गये 10 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में लिया गया था।

हिन्दी का यह महाकुंभ - 11वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन - मॉरीशस के 'स्वामी विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, पाई' में संपन्न हुआ, जिसे 'गोस्वामी तुलसीदास नगर' नाम दिया गया था। यह स्थान मॉरीशस की राजधानी 'पोर्टलुईस' से लगभग 6.6 कि.मी (वाहन से 15 मिनट का समय) की दूरी पर स्थित है। सम्मेलन के कार्यक्रम रहे -उद्घाटन समारोह, समापन समारोह, समानांतर सत्र तथा कवि सम्मेलन। गोस्वामी तुलसीदास नगर के विविध कक्षों या सभागारों को यशस्वी हिन्दी साहित्यकारों के नाम देकर अनोखे तरीके से उन्हें सम्मान दिया गया, जैसे-भूतल में मणिलाल डॉक्टर पंजीकरण स्वागत कक्ष, राय कृष्णदास प्रदर्शनी स्थल, अभिमन्यु अनत मुख्य सभागार, पंडित नरदेव वेदालंकार जलपान/ भोजनकक्ष, विचार मंथन केलिए 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हॉल' आदि। प्रथम तल में महावीर प्रसाद द्विवेदी आलेख प्रस्तुति कक्ष, गोपालदास नीरज समानान्तर सत्र कक्ष, सुरुज प्रसाद संगर भगत समानांतर सत्र कक्ष, भानुमति नागदान समानांतर सत्र कक्ष, विक्रमसिंह रामलला पत्रकार कक्ष आदि।

उद्घाटन समारोह - 'अभिमन्यु अनत मुख्य सभागार' में सम्मेलन का उद्घाटन समारोह पूवाह्न 10.00 बजे से शुरू हुआ। प्रो.कुमुदशर्मा और श्रीमती माधुरी रामधारी इस समारोह की उद्घोषिकाएँ रहीं। 16 अगस्त 2018 को दिवंगत हुए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए

दो मिनट के सामूहिक मौन के बाद मॉरीशस और भारत के राष्ट्रगान सुनाये गये। आगे श्रीमती सुषमा स्वराज (विदेशकार्य मंत्री, भारत सरकार), श्रीमती लीलादेवी दुकन लछुमन (शिक्षा मंत्री, मॉरीशस) तथा श्रीमती मृदुला सिन्हा (राज्यपाल, गोवा) ने मिलकर दीप प्रज्ज्वलन करके सम्मेलन का उद्घाटन किया। फिर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, भारत' के कुछ विदेश छात्रों ने वेद मंत्रोच्चारण किया और सरस्वती वन्दना की। 'महात्मागाँधी संस्थान, मॉरीशस' के कुछ छात्रों ने हिन्दी गान गाया। 3 जून 1970 को भारत की 'तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी' द्वारा मॉरीशस में शिलान्यास किया गया तथा 9 अक्तूबर 1976 को दोनों देशों के प्रधान मंत्रियों द्वारा उद्घाटन किया गया संस्थान है 'महात्मा गाँधी संस्थान'। विश्वविद्यालय स्तर पर इसके 5 संकाय हैं - भारतीय भाषा अध्ययन संकाय, भारतीय विद्या संकाय, संगीत एवं नृत्य कला ललित कला संकाय, मॉरीशस एवं क्षेत्रीय अध्ययन संकाय आदि।

यहाँ इस संस्थान के परिसर में 'भारतीय आप्रवासन संग्रहालय' स्थित है । '11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन' के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा प्रदत्त 'पाणिनी भाषा प्रयोगशाला' का उद्घाटन इस संस्थान में 18 अगस्त 2018 को श्रीमती सुषमा स्वराज ने किया। श्रीमती लीलादेवी दुकन लछुमन ने 'उद्घाटन सत्र' में स्वागत भाषण दिया। सम्मेलन लोगो' पर एनिमेशन फिल्म का प्रदर्शन हुआ, जो बड़ा लुभावना रहा।

'उद्घाटन सत्र' के अन्य कार्यक्रम रहे 'प्रस्तावना वक्तव्य' (श्रीमती सुषमा स्वराज, विदेश कार्यमंत्री, भारत सरकार द्वारा), 'उद्घाटन उदबोधन' (श्री प्रवीणकुमार जगन्नाथ, प्रधानमंत्री मॉरीशस द्वारा), पत्रिकाओं और पुस्तकों का लोकार्पण, कृतज्ञता-ज्ञापन (जनरल वी.के.सिंह, पूर्व विदेश राज्यमंत्री, भारत सरकार द्वारा) आदि ।

'**प्रस्तावना वक्तव्य**' में सुषमाजी ने कहा कि हिन्दी को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी भारत की है। उनके मत में 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में दो भाव एक साथ उभर रहे हैं - शोक भाव और संतोष भाव। उनका मतलब भारत के पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के 16 अगस्त 2018 शाम को निधन से सम्मेलन में छाये हुए शोक भाव तथा विविध राष्ट्रों के हिन्दी प्रेमी व्यक्तियों की अटलजी को श्रद्धांजली अर्पित करने केलिए उपस्थिति से उद्भूत संतोष भाव से था । 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' तीन बार भारत में, दो बार मॉरीशस में, दो बार गिरमिटिया देशों में, एक बार अमरीका में, एक बार ब्रिटन में और एक बार दक्षिण अफ्रीका में चलाये गये। अब 11 वाँ सम्मेलन मॉरीशस में संपन्न हो रहा है।

(विश्व हिन्दी सम्मेलन की स्वर्णिम यात्रा की तारीख और स्थान इस प्रकार हैं - प्रथम सम्मेलन 10-14 जनवरी 1975 को नागपुर (भारत) में, दूसरा सम्मेलन 28-30 अगस्त 1976 को मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुईस में, तीसरा सम्मेलन 28-30 अक्तूबर 1983 को भारत की राजधानी दिल्ली में, चौथा सम्मेलन 24 सितंबर 1993 को पोर्ट लुईस (मॉरीशस) में, पाँचवाँ सम्मेलन 4-8 अप्रैल 1996 को ट्रिनिडाड एवं टुबैगी की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में, छठा सम्मेलन 14-18 सितंबर 1999 को ब्रिटन के लंदन में, सातवाँ सम्मेलन 5-9 जून 2003 को सूरीनाम (दक्षिण अमरीका महाद्वीप के उत्तर में स्थित देश) की राजधानी पारामारिबो में, आठवाँ सम्मेलन 13-15 जुलाई 2007 को अमरीका के न्यूयोर्क में, नवाँ सम्मेलन 22-24 सितंबर 2012 को दक्षिण अफ्रीका के जोहन्नासबर्ग में, दसवाँ सम्मेलन 10-12 सितंबर 2015 को भारत की हृदयस्थली मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में तथा ग्यारहवाँ सम्मेलन 18-20 अगस्त 2018 को स्वामी विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, पाई (मॉरीशस) में ।)

'विश्व हिन्दी सम्मेलन' पर सकारात्मक दृष्टिकोण से 10 वें और 11 वें सम्मेलनों की संयोजिका श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा "हमने विश्व हिन्दी सम्मेलनों की अनुशंसाओं के अनुपालन पर खास ध्यान दिया है। हर तीन महीने में अनुशंसा अनुपालन समिति की बैठक होती है। पिछली अनुशंसाओं को 'भोपाल से मॉरीशस' शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है।" सुषमाजी ने इस बात पर भी प्रतिभागियों का ध्यान दिलाया कि पिछले हर सम्मेलन में प्रमुख दो प्रस्ताव पारित होते रहे । एक यह कि 'मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय का भवन हो'। इस प्रस्ताव का अनुपालन

हुआ है कि मार्च 2018 में मॉरीशस में 'विश्व हिन्दी सचिवालय' के भवन का उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्दजी द्वारा किया गया। दूसरा प्रस्ताव हिन्दी को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की आधिकारिक भाषा बनाने का रहा है, जिसका अनुपालन नहीं हुआ है। इस बात में मुख्य समस्या यह है कि इसका समर्थन करनेवाले देशों को संबन्धित व्यय वहन करना पड़ेगा । यदि खुद भारत को व्यय वहन करना होता तो 400 करेड़ रुपये देकर भी उसे हासिल कर लेता । सन् 1997 में वर्धा में 'महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' की स्थापना हुई तो 'विश्व हिन्दी विद्यापीठ' की स्थापना रूपी संकल्पना भी साकार हुई।

सुषमाजी ने 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के प्रतिभागियों से यह आशा की कि हर शुक्रवार को प्रसारित होनेवाले 'यू. एन. रेडियो साप्ताहिक हिन्दी बुलेटिन' को अधिकाधिक व्यक्ति सुनें, ताकि उसके दैनिक प्रसारण की राह आसान हो ।

'11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन' के विषय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सुषमाजी ने कहा कि 10 वाँ सम्मेलन भाषा केन्द्रित था, जिसमें भाषा पर केन्द्रित 12 समानांतर सत्र रखे गये थे । भाषा के बाद अगला पड़ाव संस्कृति पर ले जाने की चिन्ता में 11 वें सम्मेलन का विषय 'हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति' रखा गया ।

सुषमाजी ने 'सम्मेलन लोगो' पर बनी एनिमेशन फिल्म को यों समझाया कि भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर आएगा और मॉरीशस के राष्ट्रीय पक्षी डोडो को बचायेगा (जो डोडो पक्षी मॉरीशस में लुप्त हो गया है)। उद्घाटन सत्र में दिखाये एनिमेशन फिल्म में डोडो जब डूबने लगता है तब मोर आकर उसे बचाता है। फिर दोनों नृत्य करते हैं।

'**उद्घाटन उद्बोधन वक्तव्य**' में मॉरीशस के माननीय प्रधान मंत्री श्री.प्रवीणकुमार जगन्नाथ ने संस्कृति को बचाये रखने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने इस पर निराशा प्रकट की कि वे हिन्दी भली भाँति नहीं बोल पाते हैं । भारत में संक्रांति के दिन खिचड़ी खाने की प्रथा पर ध्यान दिलाते हुए उन्होंने कहा कि अपनी पत्नी से उन्होंने कहा है कि संक्रांति के दिन वे खिचड़ी

ही खायेंगे। उन्होंने घोषणा की कि मॉरीशस का साइबर टवर 'अटल बिहारी वाजपेयी साइबर टवर' नाम से जाना जाएगा। उन्होंने नरेन्द्र मोदी के हिन्दी प्रेम की प्रशंसा भी की।

लोकार्पित डाक टिकट, पत्रिकाएँ और पुस्तकें - मॉरीशस के प्रधान मंत्री श्री प्रवीणकुमार जगन्नाथ के हाथों दो डाक टिकटों और 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन की 'स्मारिका' का लोकार्पण हुआ।'स्मारिका' के संपादक प्रो. राम मोहन पाठक ने 'संपादकीय' में इस सम्मेलन के महत्व और संकल्पना पर यों प्रकाश डाला है - "हिन्दी का यह महाकुंभ मॉरीशस के ऐतिहासिक गंगा तालाब के तट पर संपन्न हो रहा है । आशा है, जिस प्रकार सागर मंथन से निकला अमृत कलश देव-मानव सभी केलिए संजीवनी बना उसी प्रकार 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विचार मंथन से हिन्दी की ऊर्जा का अमृत कलश प्रादुर्भूत होगा, जिसका विचारअमृत हिन्दी की भावी प्रगति यात्रा की संजीवनी शक्ति सिद्ध होगा ।" "11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस और भारत सरकार के सहयोग से तीसरी बार भारतीयों के श्रमलहू से सिंचित मॉरीशस की भूमि पर, जहाँ भारतीय संस्कृति सदियों से जीवित और जीवंत है, संपन्न हो रहा है । हिन्दी भारत-मॉरीशस संबन्धों का सुदृढ़ आधार है।" "भारतीय संस्कृति की 'उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्'और 'यत्र विश्वम् भवत्येकनड़म्' अर्थात् वर्तमान वैश्विक संकल्पना 'ग्लोबल विलेज' को मूर्त रूप प्रदान करने के संकल्प के साथ 11 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित हो रहा है।"

गोवा की राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने 'भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद' की पत्रिका 'गगनांचल' (मार्च-अगस्त 2018 संयुक्तांक, संपादक डॉ. हरीश नवल का, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल तथा हिन्दी कवि श्री. केदारीनाथ त्रिपाठी ने मॉरीशस की 'दुर्गा' पत्रिका (प्रकाशक- कमल किशोर गोयंका) का, श्रीमती सुषमा स्वराज ने 'राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार' की 'राजभाषा भारती' पत्रिका के विशेषांक का, श्रीमती लीलादेवी दुकन लछुमन ने 'विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस' की 'विश्व हिन्दी साहित्य पत्रिका' का, भारत के विदेश राज्य मंत्री श्री. एम.जे.अकबर ने मॉरीशस के हिन्दी लेखक स्वर्गीय श्री अभिमन्यु अनत की पुस्तक 'प्रिया' का तथा भारत के (पूर्व) विदेश राज्यमंत्री जनरल वी. के. सिंह ने 'भोपाल से मॉरीशस' पुस्तक (संपादक-श्री अशोक चक्रधर; प्रकाशक विदेश कार्य मंत्रालय, भारत सरकार) का लोकार्पण किया। 'भोपाल से मॉरीशस' पुस्तक की भूमिका (शीर्षक है- भारत का मोर मॉरीशस की डोडो) में प्रो. अशोक चक्रधर ने बड़ी भावना के साथ 11 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस में आयोजित करने के बारे लिखा है - "मॉरीशस की डोडो भारत के मोर को न्योता देने भोपाल आयी। मोर ने तत्काल मंजूरी दे दी।"

श्री अशोक चक्रधर की काव्य पंक्तियाँ हैं- "भारत का है मोर और मॉरीशस की डोडो, आ गई, आ गई सतरंगी माटी से आ गई डोडो ।" यह पुस्तक 10 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के 12 समानांतर सत्रों में निकली अनुशंसाओं तथा उन पर की गयी कार्यवाहियों पर तैयार की गयी है। इस पुस्तक के संदेश में विदेशकार्य मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन केलिए किये गये प्रयासों के बारे में यों लिखा है- "इस पुस्तक में यह जानने को मिलेगा कि पिछले तीन साल में हमने किस गति से काम किया । दसवें सम्मेलन की अनुशंसाओं को हम कितना पूरा कर पाये हैं।"

'उद्घाटन समारोह' के अंत में जनरल वी.के. सिंह (पूर्व विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार)ने **कृतज्ञाता-ज्ञापन** किया ।

श्रद्धांजलि सभा - 'उद्घाटन समारोह' के बाद आधा घंटा जलपान केलिए रखा गया था । फिर 'अभिमन्यु अनत मुख्य सभागार' में आयोजित 'श्रद्धांजलि सभा' में 16 अगस्त 2018 को दिवंगत हुए भारतीय राजनेता तथा पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी को विद्वानों द्वारा श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गयीं। श्रद्धांजलि वक्तव्य देनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दो-दो मिनट दिये गये । सर्वश्री भर्तृहरी महतब, अजमीरा सीताराम नायक, अशोक चक्रधर, गजेन्द्र सोलंकी, मौरीशस के दो प्रतिनिधियों तथा अन्य कुछ विदेशी विद्वानों ने वक्तव्य में वाजपेयीजी से अपने श्रद्धा भाव तथा आत्मीय संबन्ध प्रकट किये ।

समानांतर सत्र - 'श्रद्धांजलि सभा' के बाद 12.30 बजे से 2.00 बजे तक का समय दोपहर के भोजन केलिए रखा गया था। 11 वें सम्मेलन के पहले दिन अपराह्न 2.00 बजे से 6.00 बजे तक 'हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति' मुख्य विषय पर केन्द्रित चार उपविषयों पर समानांतर सत्र चलाये गये जैसे - (1) भाषा और संस्कृति के अंतर्संबन्ध (श्रीमती मृदुला सिन्हा इस सत्र की अध्यक्षा रहीं), (2) प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं का विकास (श्री किरण रिजिजु, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार इस सत्र के अध्यक्ष रहे।), (3) हिन्दी शिक्षण में भारतीय संस्कृति (अध्यक्ष - उदयनारायण गंगू) और (4) हिन्दी साहित्य में संस्कृति चिंतन (अध्यक्ष- डॉ. राजरानी गोबिन) आदि समानांतर सत्र के बाद 7.00 बजे को रात्रि भोज शुरू हुआ ।

19 अगस्त 2018 सम्मेलन का दूसरा दिन था। पूर्वाह्न 10.00 बजे को सम्मेलन शुरू हुआ । इस दिन के चार समानांतर सत्रों के विषय रहे (1) फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण (अध्यक्ष - प्रसून जोशी, चेयर मैन, सेंसर बोर्ड), (2) संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति (अध्यक्ष - सत्यदेव टेगर), (3) प्रवासी संसार : भाषा और संस्कृति (अध्यक्ष - कमल किशोर गोयन्का), (4) हिन्दी बाल साहित्य और भारतीय संस्कृति आदि ।

समापन समारोह - सम्मेलन के तीसरे दिन (सोमवार, 20 अगस्त 2018 को)'अभिमन्यु अनत मुख्य सभागार' में श्री केसरीनाथ त्रिपाठी (महामहिम राज्यपाल, पश्चिम बंगाल, भारत) की अध्यक्षता में समापन समारोह 11.30 बजे को प्रारंभ हुआ । महामहिम परमसिवम पिल्लै वैयापुरी (कार्यवाहक राष्ट्रपति, मॉरीशस गणराज्य) तथा श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ (मार्गदर्शक मंत्री,

रक्षा मंत्री, रॉड्रीगस मंत्री, रक्षा मंत्री, मॉरीशस) श्रीमती सुषमा स्वराज (विदेश कार्य मंत्री, भारत सरकार) तथा श्रीमती लीलादेवी दुकन लछुमन (शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान मंत्री, मॉरीशस) आदि अतिथि रहे। समापन समारोह के प्रारंभ में 'इंदिरा गाँधी सेंटर फोर इंडियन कल्चर' के कुछ अध्यापकों और छात्रों ने 'भारत जननी एक ही हृदय हो' से शुरू होनेवाला गौरव गान गाया। फिर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा' के कुछ विदेशी छात्रों ने 'न जाग रे निपट सकेगे ...', 'बरसी तीन कमानों से...', 'दुनिया रे जाग रे...', 'प्यार की मुस्कानों से...' शब्दों से शुरू होनेवाले 4 'शांति गीत' गाये ।

आगे '**अनुशंसाओं की प्रस्तुति**' का दौर था । सम्मेलन के पहले दो दिनों में 'हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति' मुख्य विषय पर केन्द्रित उपविषयों पर चलाये गये 8 समानांतर सत्रों की अनुशंसाएँ प्रत्येक सत्र के संयोजकों द्वारा पढ़ी गयीं ।

'यू.एन. रोडियो साप्ताहिक हिन्दी बुलेटिन' का 18 अगस्त 2018 को सबह 6.08 बजे का '**हिन्दी समाचार वाचन**' प्रतिभागियों को सुनाया गया ।

विश्व हिन्दी सम्मान - समापन सत्र में हिन्दी शिक्षण एवं साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा किये व्यक्तियों को उनके विशिष्ट देन के उपलक्ष्य में विश्व हिन्दी सम्मान से सम्मानित हुए । यह सम्मान पहली बार भारत और विदेश की विशिष्ट हिन्दी सेवी संस्थाओं को भी दिया गया । सम्मानित हुए व्यक्ति निम्नलिखित हैं - व्रजलाल नंदर (मरणोपरांत, मॉरीशस), अभिमन्यु अनत (मरणोपरांत, मॉरीशस ; पत्नी सरिता ने सम्मान स्वीकार किया ।), प्रो. जावेद खालोक, डॉ. रामप्रसाद परसराम, डॉ. इनेस फानैल (जर्मनी), अन्ना चेलनोकावा (रूस), प्रो. गलीना रूसोवा सोकलोवा (बलगेरिया), डॉ. उदयनारायण गंगू (मॉरीशस), श्री हनुमान दुबे गिरधारी (मॉरीशस), श्री किशन बद्धू (मॉरीशस), सुश्री उनगू ली (दक्षिण कोरिया), श्री गोपाल ठाकुर (नेपाल), सिलेंगमा चानरफ्रा (मंगोलिया), नेमानी बैनीवाली (फिजी), बेसिल नगोड़ा वितान (श्रीलंका), श्रीमती सुनीता नारायण (न्यूज़ीलैण्ड), प्रो. काजुहिको मजीदा (जापान), डॉ. रान्ताकर नराले (कानडा), ई. मादे धर्मयश (इंडोनेशिया) आदि विदेशी विदान । पीवलोरी प्रसाद शिवराम, डॉ. जोरम आनिया

नाना (अरुणाचल प्रदेश), श्री प्रसून जोशी, प्रो. डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी (दिल्ली), डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी (कोलकत्ता), डॉ. चनमलाल, डॉ. ऋता शुक्ल (रांची), प्रो. श्रीधर पराड़कर, श्री तज्जनसोबा आओ (नागालैण्ट), डॉ. सुभाष सी. कश्यप (दिल्ली), डॉ. सी. भास्कर राव (रांची), डॉ. के. सी. अजयकुमार (केरल), अजयकुमार पटनायक आदि भारतीय। सम्मानित संस्थाएँ हैं - हिन्दी प्रचारिणी सभा (मॉरीशस), टोकियो विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग, आर्य सभा (मॉरीशस), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (चेन्नै), सी. डाक आदि। 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के लोगो निर्माता श्री सुचित यादव (विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस) भी समापन समारोह के असर पर सम्मानित हुए।

गंगा आरती - गंगा तालाब अथवा ग्रांड बेसिन हिन्द महासागर के द्वीप देश मॉरीशस का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह एक मृत ज्वालामुखी के अंदर निर्मित प्राकृतिक झील है। माना जाता है कि इस जल का स्रोत भारत की पवित्र नदी गंगा है। गंगा तालब के तट पर भगवान शिव की 108 फीट ऊँची प्रतिमा है । 18-20 अगस्त 2018 को संपन्न हुए 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के पिछले दिन (17 अगस्त 2018 को) शुक्रवार शाम को 5.30 बजे गंगा तालाब में सम्मेलन की सफलता केलिए विशेष 'गंगा आरती' की गयी । 'गंगा आरती' का नेतृत्व श्रीमती सुषमा स्वराज (विदेश कार्य मंत्री, भारत सरकार) तथा प्रवीण कुमार जगन्नाथ (प्रधान मंत्री, मॉरीशस) को करना चाहिए था। लेकिन 16 अगस्त 2018 शाम को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का निधन हो जाने के कारण सुषमाजी 17 अगस्त 2018 को मॉरीशस पहुँचने नहीं सकीं । अतः श्रीमती मृदुला सिन्हा (राज्यपाल, गोवा) श्री केसरीनाथ त्रिपाठी (राज्यपाल, पश्चिम बंगाल), श्री वी. के. सिंह (पूर्व विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार), श्री एम. जे. अकबर (विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार) आदि ने 'गंगा आरती' को नेतृत्व दिया। इस अवसर पर मॉरीशस का हिन्दी समाज और विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने आये करीब 2000 प्रतिभागी उपस्थित

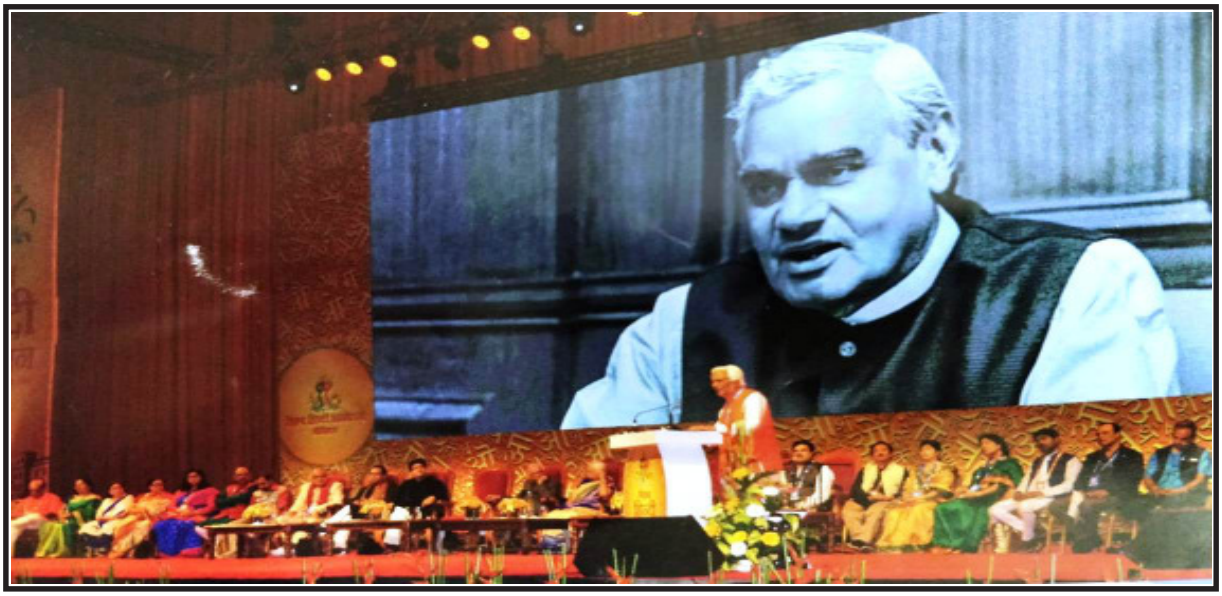

थे। 'गंगा आरती' के बाद प्रो. अजय श्रीवास्तव (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय) ने तालाब के पवित्र गंगा जल में सरस्वती नदी का पवित्र जल विधिपूर्वक मिश्रित किया, जो एक ऐतिहासिक घटना रही ।

प्रीति भोज और कवि सम्मेलन - 18 अगस्त 2018 को औपचारिक रात्रि भोज का आयोजन भारत सरकार ने किया । 19 अगस्त 2018 को औपचारिक रात्रि भोज का आयोजन मॉरीशस सरकार ने किया और उसके बाद 'भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद' द्वारा आयोजित 'कवि सम्मेलन' (अटलजी की याद में काव्यांजली) रात को 9.00 बजे से चलाया गया, जो दो घंटे का रहा ।

प्रदर्शनी - सम्मेलन के मुख्य विषय पर आधारित 'प्रदर्शनी' का आयोजन दोनों देशों - मॉरीशस और भारत -की ओर से किया गया था। प्रदर्शनी स्थल को 'राय कृष्ण दास प्रदर्शनी स्थल' नाम दिया गया था। भारत से निम्नलिखित संस्थाओं / प्रकाशकों द्वारा प्रदर्शनी लगायी गयी थी- राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (दिल्ली), अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ (दिल्ली), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (दिल्ली), हिन्दी अकादमी (दिल्ली), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान (आगरा), मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी (भोपाल), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय (वर्धा), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (दिल्ली), हरियाणा ग्रंथ अकादमी; प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (नयी

दिल्ली), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (लखनऊ), साहित्य अकादमी (दिल्ली) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (दिल्ली), सी-डैक पुणे, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय, भारत सरकार), प्रभात प्रकाशन, किताबघर प्रकाशन आदि। मॉरीशस से निम्नलिखित संस्थाओं की 'प्रदर्शनी' लगायी गयी थी- शिक्षा, मानव संसाधन तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान मंत्रालय (मॉरीशस सरकार), कला एवं संस्कृति मंत्रालय, विश्व हिन्दी सचिवालय, महात्मा गाँधी संस्थान, हिन्दी प्रचारिणी सभा, सामाजिक व सांस्कृतिक संस्थाएँ जैसे -मॉरीशस हिन्दी संस्थान, आर्य सभा, रामायण सेंटर आदि। लगभग तीस से अधिक प्रदर्शनियाँ थीं,जो जन साधारण के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थीं।

पर्यटन - 19 अगस्त 2018 को दोपहर के भोजन के बाद पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया। प्रतिभागियों को मॉरीशस यूनिवेर्सिटी, महात्मा गाँधी संस्थान, विश्व हिन्दी सचिवालय जैसी संस्थाओं को देखने का मौका मिला। डायमण्ट फैक्टरी, शिप फैक्टरी आदि भी देखने गये।

'आप्रवासी घाट' का दर्शन करने का जो अवसर प्राप्त हुआ, वह सदा प्रतिभागियों के मन में रहेगा । पोर्ट लुईस में अवस्थित आप्रवासी घाट (इमिग्रेशन डिपो) एक भवन है, जहाँ भारत से संविदा पर आनेवाले मज़दूर उतरते थे। इस भवन का निर्माण सन् 1849 से 1923 तक हुआ। पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में काम करने केलिए पाँच लाख मज़दूर इस 'आप्रवासी घाट' से गुज़रे।

'केमेरल' मॉरीशस के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित एक छोटा गाँव है । सात रंगों की रेत की परतें इस स्थान की विशेषता है ।

'पेयरबेर बीच' मॉरीशस के उत्तरी भाग में अवस्थित है, जो स्वच्छ नीला पानी तथा चमकदार सफेद रेतवाला बीच है। 'पेयरबेर बीच' पानी के खेलों केलिए बहुत अच्छी जगह है।

'ला वल्ले डेस कलेर्स नेचर पार्क' का क्षेत्र फल 450 एकड है। यह, Zipline, Nepalese bridge आदि से संपन्न एड्वेंचर पार्क है। यहाँ एक स्थान पर 23 विविध रंगों की घरती अवस्थित है। बहुत सुन्दर जलपात दूसरी विशेषता है।

अक्षर वृक्ष -'अभिमन्यु अनत मुख्य सभागार' में प्रवेश करने के पहले सहायता केन्द्रवाले सभागार में 'मणिलाल डॉक्टर पंजीकरण स्वागत कक्ष' में प्रतीभागियों का स्वागत करता हुआ एक कृत्रिम 'अक्षरवृक्ष' लगाया गया था।

मणिलाल डॉक्टर का परिचय पाये बिना मॉरीशस के संबन्ध में जानकारी बिलकुल अधूरी रह जाएगी । 13 अक्तूबर 1907 को मणिलाल डॉक्टर का मॉरीशस में आगमन के साथ वहाँ के भारतीय मज़दूरों को एक सच्चा संरक्षक ही मिला ।

वे बैठकाओं-सामाजिक केन्द्र जहाँ बैठकर भारतीय आप्रवासी अपने सुख दुःख बाँटते थे - में जाकर हिन्दी में ओजस्वी भाषण देते थे, क्योंकि हिन्दी वहाँ के लोगों की भाषा थी। 'यंगमेन हिन्दू एसोसिएशन' की स्थापना, 'आर्य समाज' की स्थापना, 'हिन्दुस्तानी' पत्र का प्रकाशन और वितरण जैसे कई कार्य किये।

11 वें सम्मेलन का आयोजन बहुत अच्छा था। प्रतिभागों को किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं हुई। मॉरीशस सरकार द्वारा नियुक्त संपर्क अधिकारियों

ने प्रतिभागियों का 'सर शिवसागर रामगुलाम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे' पर स्वागत किया। आप्रवासन के शीघ्र निपटान केलिए मुख्य टर्मिनल पर विशेष काउंटर खोले गये थे, जिससे सारे प्रतिभागी प्रवासन संबन्धी प्रक्रिया शीघ्र पूरा कर सके। हवाई अड्डे पर मुद्रा विनिमय की सेवा भी उपलब्ध करायी गयी थी। प्रतिभागियों को आगमन एवं प्रस्थान के समय हवाई अड्डे और होटल के बीच परिवहन की व्यवस्था की गयी थी। सम्मेलन स्थल पर आने-जाने केलिए भी परिवहन सेवा उपलब्ध थी।

सम्मेलन के बाद अपने-अपने देश लौट जानेवाले प्रतिभागियों की बिदाई केलिए सम्मेलन के संगाठकों द्वारा नियुक्त मॉरीशस के अधिकारी 'सर शिवसागर रामगुलाम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे' में आये थे।

सम्मेलन में पंजीकृत प्रतिभागियों को 'पहचान पत्र' दिया गया। सुरक्षा कारणों से यह पहनना अनिवार्य था।

समानांतर सत्रों में आलेख प्रस्तुति का समय तथा निश्चित सभागारों की जनकारी केलिए आधिकारिक वेबसाइट उपलब्ध था, सम्मेलन स्थल पर बनाये गये सहायता केन्द्र से भी संपर्क कर सकता था।

♦ मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी
(पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
सरकारी महिला महाविद्यालय)
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।
फोन : 9946253648

सही उत्तर चुनें

1. 11 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन कहाँ संपन्न हुआ ?

(अ) न्यूयोर्क (आ) जोहन्नासबर्ग

(इ) सूरीनाम (ई) मॉरीशस

2. विश्व हिन्दी सचिवालय कहाँ स्थित है ?

(अ) दिल्ली (आ) न्यूयोर्क

(इ) कोलकत्ता (ई) मॉरीशस

3.संप्रति विश्व हिन्दी सचिवालय के महासचिव कौन हैं?

(अ) विनोद कुमार मिश्र (आ) प्रवीण कुमार जगन्नाथ

(इ) मृदुला सिन्हा (ई) जनरल वी.के. सिंहा

4. मारीशस में कुल कितने विश्व हिन्दी सम्मेलन संपन्न हुए ?

(अ) 1 (आ) 2 (इ) 3 (ई) 4

5. 10 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन स्थान कहाँ था ?

(अ) दिल्ली (आ) भोपाल

(इ) कोलकत्ता (ई) नागपुर

6. विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत के किस मंत्रालय के द्वारा किया जाता है ?

(अ) गृह मंत्रालय (आ) वित्त मंत्रालय

(इ) विदेश कार्य मंत्रालय

(ई) मानव संसाधन विकास मंत्रालय

7. विश्व हिन्दी सचिवालय की वार्षिक पत्रिका का नाम क्या है ?

(अ) गगनांचल (आ) दुर्गा

(इ) राष्ट्रभाषा भारती (ई) विश्व हिन्दी पत्रिका

(शेष पृ.सं. 29)

हिन्दी विश्व : विकास की दिशाएँ

(11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आलेख)

♦ डॉ.सुमा.आई

भाषा एक दैवी शक्ति है जो मानव को मानवता प्रदान करती है। भावों को प्रकट करने, विचारों के आदान-प्रदान बढ़ान तथा आपस का पारस्परिक संबंध बनाए रखने का यही एक विश्वव्यापी और सशक्त माध्यम है। भारत एक ऐसा प्रदेश है जो सदियों से आक्रमणकारियों का अधीनस्थ रहा है। भारतीय हमेशा अपनी संस्कृति पर गर्व करनेवाले रहे हैं। विश्व में कुछ नामी वर्ग ही ऐसे हैं जो संपूर्ण विश्व में अपना अस्थित्व स्थापित करने के बाद भी अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा को बचाके रखते हैं। भारतीय, चीनी तथा जापानी लोग इसके उदाहरण हैं। संस्कृति के अनेक कारक तत्व होते हैं। उनमें एक महत्वपूर्ण तत्व 'भाषा' भी है। भारत ने अपने ऊपर आए संघर्षों से मुक्ति पाने के लिए जब भी आन्दोलन चलाए तब भाषा ही सांस्कृतिक एकता का साधन बनकर आगे रही थी। विश्व में बोलचाल के लिए लगभग तीन हज़ार से भी ज़्यादा भाषाओं और बोलियों का प्रयोग होता है। आज बोलनेवालों की संख्या के आधार पर चीनी भाषा (मंदारिन) के बाद हिन्दी विश्व की दूसरी भाषा बन गई है।1

हिन्दी के महत्व को सर्वप्रथम स्वतंत्र लेखकों तथा पत्रकारिता जगत् के संपादकों ने समझ लिया था। राजा राम मोहनराय एवं केशवचन्द्र सेन ने हिन्दी को ही भारत वर्ग की भाषा के रूप में अंगीकार किया। राष्ट्रवादी चिंतक बंकिमचन्द्र चटर्जी ने बंगला पत्र बंगदर्शन में सन् 1877 में लिखा "सुशिक्षित बंगालियों को एक बात बताना चाहता हूँ। .... हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के बीच, जो ऐक्य बंधन स्थापित कर सकेंगे, वे ही सच्चे भारतबंधु की संज्ञा पाने के योग्य होंगे। सभी चेष्टा करें, प्रयत्न करें, जितने भी समय में क्यों न हो मनोरथ पूर्ण होगा।"[2] स्वतंत्रता आन्दोलन के सिलसिले में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की ओर नेताओं की दृष्टि पड़ी। पंड़ित मदन मोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मागाँधी आदि राजनैतिक तथा सामाजिक नेता हिन्दी के वक्ता ही थे। गाँधीजी ने सन् 1918 में अपने वक्तव्य में कहा - "आप हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें कर्तव्यपालन करना चाहिए।"[3] इन नेताओं के अलावा अनेक सामाजिक, राजनीतिक तथा भाषाई संस्थाओं ने हिन्दी के विकास के लिए ठोस कदम उठाए। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी के महत्व को पहचानते हुए इसे संविधान के भाग 17 के अंतर्गत 14 सितंबर 1949 को 'राजभाषा' के रूप में प्रतिष्ठा मिल गई।

हिन्दी भाषा में भारत की विराट संस्कृति का समन्वय सूत्र विद्यमान है। इसमें देश की एकता सन्निहित है। आज हिन्दी विश्व भाषा बन गई है। हिन्दी को जब हम विश्वभाषा कहते हैं इसके कई आधार हो सकते हैं। सर्वप्रथम बात यह है कि हिन्दी काफ़ी पुरानी भाषाओं में से एक है अर्थात् इसकी उत्पत्ति विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत से हुई है। संस्कृत से उद्भूत होकर पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए इसका विकास हुआ है। हिन्दी अब न केवल भारत मात्र की भाषा रही है, बल्कि विश्व के कई देशों पर जैसे - दक्षिण अफ्रिका, मारीशस, फिजी आदि में सैकड़ों वर्ष पूर्व गए भारतीयों और उनके बाल-बच्चों की भी भाषा है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि है। समय-समय पर इसमें परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किए जाते रहे हैं। हिन्दी में पच्चीस लाख से ज़्यादा शब्द प्रचलित हैं। अन्य भाषाओं से भी उदारतापूर्वक शब्दों का ग्रहण इस भाषा ने किया है। भारतीय ज्योतिष, योगा, आयुर्वेद आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा का भी प्रचार काफ़ी मात्रा में विदेशों में हुआ है।

वैश्वीकरण के इस दौर में भारतीय बाज़ार की ताकत तो बढ़ती ही जा रही है। बाज़ार के बदलते रुख को पहचाननेवाली बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिन्दी विज्ञापनों के ज़रिए चीज़ों की बिक्री बढ़ाती हैं। आज भारतीय उपमहाद्वीप में ही नहीं, बल्कि यूरोप और अफ्रीका में भी हिन्दी कार्यक्रम उपग्रह के ज़रिए प्रसारित हो रहे हैं। हिन्दी फिल्मों की प्रदर्शनी दुनिया के अनेक देशों में सफलतापूर्वक हो रही है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक,आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग की ओर देखें तो हमारे देश के नेताओं ने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ आदि में भी हिन्दी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया है। हमें अपने मन में यह भाव हमेशा बनाए रखना चाहिए कि भाषा न कोई छोटी है न कोई बड़ी। यह तो भाषा-भाषियों पर निर्भर रहता है कि वे अपनी भाषा को किस सीमा तक गौरवपूर्ण स्थान तक ले जाना चाहते हैं।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की ओर ध्यान दें तो वहाँ हिन्दी सभी प्रवासी भारतीयों को जोड़नेवाली कड़ी के रूप में दिखाई देती है। हिन्दी विश्व के प्रायः सभी महत्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन की भाषा है। आज विश्व के एक सौ पचास से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। मॉरीशस में प्राथमिक स्तर से ही हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। 'विश्व हिन्दी सचिवालय' भी मॉरीशस में है।

हिन्दी का विकास तो ज़ोरों पर चल रहा है। फिर भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ विशेष रूप से ध्यान देने की ज़रूरत है। हिन्दी का संवेदनात्मक साहित्य तो उच्च कोटि का है। लेकिन ज्ञान का साहित्य अंग्रेज़ी के स्तर का नहीं है। तकनीकी विषयों पर हिन्दी में पुस्तकों का नितान्त अभाव है। प्रवासी लोग भारत की परिनिष्ठित हिन्दी का सम्मान तो करते हैं। विद्यालयों में छात्र इसे सीखते भी हैं। लेकिन वहाँ के प्रबुद्ध वर्ग अपनी हिन्दी

का (जिसमें मैथिली, भोजपुरी, जैसी बोलियों का प्रभाव है) समर्थन करते हैं। अलग-अलग देशों में इसका नाम भी अलग-अलग है। जैसे -फीजी में वह 'फिजीबात' है, सुरीनाम में वह 'सरनामी हिन्दी' और दक्षिण अफ्रीका में 'नेताली' है। भारत में औपचारिक रूप से हिन्दी पढ़ने आए प्रवासी वहाँ लौट जाने पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अपनी हिन्दी को टूटी-फूटी और भ्रष्ट कहते हैं। इन दो विचारधाराओं का पारस्परिक विरोध हिन्दी के विकास में बाधा उत्पन्न करता है हिन्दी के वैश्विक स्वरूप को बढ़ाने के लिए इस प्रकार के वैमनस्यों को दूर करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। प्रवासी भारतीयों की रचनाओं को भी हिन्दी जगत में मान्यता मिलनी चाहिए। हिन्दी और उसकी अंतर्राष्ट्रीयता पर बात करते हुए मॉरीशस के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार हीरामन का कहना है - "अभिमन्यु अनत को जो मेरे देश के हैं, उन्हें साहित्य अकादमी का सर्वाच्च सम्मान मिलना हिन्दी और हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीयता ही तो हैं। भारत के बाहर यहाँ सबसे अधिक हिन्दी रचनाकारों के प्रकाशन हो रहे हैं। यह अंतर्राष्ट्रीयता ही है। मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय का सक्रिय होना यह संकेत देता है कि भारत के साथ-साथ दुनिया के अन्य देश भी हिन्दी के विकास के लिए कटिबद्ध हैं, दिलो-जान से हिन्दी को चाहते हैं और जी जान से उसके लिए काम कर रहे हैं।"

हिन्दी भाषा की क्षमता और स्वरूप की समग्रता का अकलोकन करने पर हमें मालूम होगा कि यह एक समृद्ध भाषा है और इसमें विकासशीलता एवं परिवर्तनशीलता का विलक्षण गुण विद्यमान है। इसे अंतर्राष्ट्रीय रूप देने के लिए सभी हिन्दी प्रेमियों को इसका प्रयोग प्रचार तथा प्रसार का ठोस कदम उठाना है।

(मॉरीशस में संपन्न 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' में ने भाग लिया।)

संदर्भ

1. द कैब्रिज एनसाइक्लोपीड़िया ऑफ लैंग्वेज, कैब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस - 1988, पृ.सं. 287
2. हिन्दी पत्रकारिता का बृहत् इतिहास - डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. 18
3. हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि - डॉ.बी.के. गर्ग, पृ.सं. 51
4. साक्षात्कार-आजकल, जनवरी 2016, पृ.सं. 25

♦ असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
सरकारी विक्टोरिया कॉलेज
पालक्काड, केरल - 678001
फोन : 9400070400

सूचना

NET (हिन्दी) तथा Spoken Hindi की कक्षाओं में प्रवेश पाने को इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें -

फोन : 9946253648, 0471- 2332468

भूमण्डलीकरण और सूर्यबाला की कहानियाँ

• डॉ.उषा.बी.नायर

1980 के बाद संसार भर में जो वैज्ञानिक प्रगति अतिवेगता के साथ बढ़ रही है उसने एक नई सभ्यता एवं संस्कृति को जन्म दिया है। जिस रूप में आज हम दुनिया देख रहे हैं वह पिछले बीस-पचीस साल से उभरा हुआ नया लोक है, जहाँ दुनिया की व्यापकता कम होते, आज पूरी दुनिया हमारी ऊँगलियों की नोक पर पहुँच गई है। इसी प्रक्रिया से इसको भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, आदि नाम दिए गए। इसी से उपजी नई संस्कृति 'उपभोक्तवाद', 'बाज़ारीवाद'आदि कहलाए गये।

भारत इस भूमंडलीकरण के वर्तमान दौर में "विश्व का सबसे तेज़ी से प्रगति करता मुक्त बाज़ारवाला लोकतंत्र कहे जाने लगा है। भारत की सांस्कृतिक समरसता लोकतांत्रिक सत्ता एवं तर्कशील जीवंतता के साथ-साथ आजकल आर्थिक समृद्धि का नया रूप जुड़ रहा है। आज भारत केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि एक आशा, आकांक्षा, प्रतीक्षा है। अवसर एवं विश्वास का नया प्रतीक है। भार का छलकता विश्वास विश्व के विविध मंचों पर लक्षित है। भूमण्डलीकृत भारत का यह संक्रमण काल है। जहाँ जीवन-मूल्य, आदर्श और संस्कार में तेज़ी से बदलाव आ रहे हैं और इन्हें बौद्धिक स्तर से नहीं बल्कि आम आदमी की नज़रों से देखने का प्रयास साहित्य में निरंतर चलता आ रहा है।

भूमंडलीकरण का संबंध केवल व्यापार - व्यवसाय से ही नहीं बल्कि बौद्धिक भी है, जहाँ विचार और प्रतिभा बेरोकटोक एक दूसरे राष्ट्रों की सीमाओं से आ-जा सकती है। समूचा लोक एक गाँव का रूप ले चुका है तथा राष्ट्र की सीमाएँ केवल भौगोलिक सीमाएँ बन गई है। सांस्कृतिक, बौद्धिक स्तर पर ये कोई मायना नहीं रखते। सूचना एवं प्रौद्योगिकी क्रांति से विकसित कंप्यूटर, मोबाइल फोन तथा उन पर अधिष्ठित इंटरनेट, वेबसाइट, ब्लॉग आदि के माध्यम से लोगों के बीच की दूरियाँ कम हो गई हैं। आम आदमी भी आज विश्व नागरिक बन चुका है।

भूमण्डलीकरण से उपजे उपभोक्तवाद एवं बाज़ारवाद के आकर्षण में आज विकसित एवं विकासशील का एक वर्ग इस प्रकार जकड़ा हुआ है कि भौतिकवाद से प्रभावित वह अंधा धुंध दौड़ रहा है और अंततः वह आर्थिक मानव एवं अतृप्त उपभोक्ता बनकर जी रहा है। परिवार एवं समूह

की ऊष्मलता से दूर वह मानसलिक बेचैनी का अनुभव कर रहा है। यह आधुनिक जीवन की चिंताजनक बीमारी है। असहिष्णुता, वैचारिक कट्टरता आदि ईसी की देन है। एक चिंताजनक पहलू यह भी है कि भारत से अमीर-गरीब की कोई बढ़ती जा रही है। सोफ्टवेअर कंपनियाँ अधिकाधिक वेतन देकर युवापीढ़ी को लुभा रही हैं तो दूसरी ओर कम वेतन वाले मज़दूरों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। सरकारी दफ्तरों में स्थिर कर्मचारियों को जगह contract दे कर युवापीढ़ी को, असुरक्षा का बोध दिलाया जा रहा है। इनके बीच की खाई कई प्रकार के अपराधों का मूल है।

इन्हीं के साथ और एक बात विशेष विचारबोध है, वह है अंग्रेज़ी का अन्य भाषाओं पर हाठी होते जाना। प्रादेशिक भाषाएँ वितुप्त होती जा रही है। शिक्षित वर्ग बच्चों को अंग्रेज़ी मात्र सिखाने के तत्पर है। मातृभाषा बोलने में अहंकार करने वाला यह वर्ग अन्य भाषाओं के लुप्त होने का कारण बनता जा रहा है।

इन्हीं परस्पर विरोधियों को खोजने, पहचानने एवं समझने का निरंतर प्रया साहित्य में भी निरंतर चलता आ रहा है।

भूमंडलीकरण ने महिलाओं को प्रगति करने का काफी अवसर दिया है, हालांकि यह बहुत सीमित वर्ग तक ही रहा। ज़्यादातर महिलाएँ बाज़ारवाद की जकड में फंसकर था फिर शादीसुदा हो कर पति की चलती-फिरती गुडिया बनकर, अपने को बेबस और लाचार पा रही है। फिर भी यह अनदेखा नहीं किया जा सकता कि वर्तमानकाल में भारतीय महिलाओं ने काफी प्रगति की है।

बैंकिंग, वाणिज्य, विपणन जैसे अपेक्षाकृत पुरुष केंद्रित क्षेत्रों में महिलाएँ ऊँचे पद पर आसीन हैं तथा परंपरागत लोक से उठकर अनेक क्षेत्रों में वे सफल हो रही हैं। विनीता बाजी, एकता कपूर, चंदा कोलर, विभा कपूर ऐसी कितनी ही सफल महिलाओं का जिक्र रोज़ सुनने को आता है। इन सफल महिलाओं के अलावा ऐसी भी कुछ महिलाएँ हैं जिनकी छवि का भरपूर इस्तेमाल बाज़ार एवं विज्ञापनों में हो रहा है। बहुराष्ट्र कंपनियों के बाज़ारवाद पर आकृष्ट भारतीय नारियों को नए अवसर प्राप्त होंगे इसमें कोई संदेह नहीं। साथ ही अपनी छवि के सुखद परिवर्तन का आभास देते हुए कई महिलाओं को बाज़ारवाद ने वंचित भी किया। इनके रचे, गए मायावीजाल ने महिलाओं के शोषण को उत्प्रेरित किया कि वे असलमें निडर और शक्तिशाली बनी है। भारत में भूमण्डलीकरण ने बाज़ार की संस्कृति को जन्म दिया तथा उपभोक्तवाद की संस्कृति को पनपाया यह निस्संदेह है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हे 'येन केन प्रकारेण लाभ कमाना तथा भोगों और फेंकों की संस्कृति।

हिन्दी कहानी लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में भूमडलीकरण के उपर्युक्त विविध पहलुओं को काफी सफलता से अंकित करने का प्रयास किया

है। लेकिन खेद की बात यह है कि इनमें अधिकतर कहानियों में भूमण्डलीकरण एवं सूचना प्रौद्योगिकी आदि से प्रभावित नारी की घुटन एवं पीड़ा का चित्र ही अधिक अंकित हुआ है। इनके गुणों पर आधारित रचनाएँ बहुत कम है।

मेहरुन्निसा परवेज़, मैत्रेयी पुष्पा,नासिरा शर्मा, नवनीत कनकलता, राजी सेठ, अरुणा सीतेश, क्रांति द्विवेदी, अचला शर्मा, गीता पटनायक, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, दीप्ति खंडेलवाल, वर्तिका अग्रवाल, सूर्यबाला आदि कई लेखिकाओं ने बड़ी तन्मयता से स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ-साथ उसके घुटन एवं पारिवारिक जीवन में आए परिवर्तन एवं शिथिलता, सामाजिक स्तर पर व्यक्तियों के रवैयों पर आए नए चेहरे आदि अनेकानेक पहलुओं पर चित्र अंकित किए हैं।

सूर्यबाला की दो कहानियों पर 'बच्चे कल मिलेंगे' तथा 'रेस' पर विचार करना इस अवसर पर संगत होगा।

'बच्चे कल मिलेंगे' में दादा-दादी का अमरीका जाना और अपनी पोतियों से मिलने का मार्मिक चित्र है। दादा-दादी बड़ी आकांक्षा और प्रतीक्षा के साथ अपने बेटे-बहू एवं पोतियों से मिलने बीस-बाईस घंटे के लंबे विमान सफर के बाद अमरीका पहुँचते हैं। घर पहुँचने पर इन्हें इनके कमरे में पहुँचाकर बहू ऑफिस जाने निकल पड़ती है। ब्रेकफास्ट टेबुल पर रखा है। थोड़ी देर आराम करने को कहकर वह चली जाती है। पोतियों सो रही थीं। इन्हें लगता है कि जब वे उठेंगी तो वे आकर इन्हें मिलने आएंगी। लेकिन ऐसा नहीं होता। बच्चे जागकर स्कूल जाने तैयार होकर चले जाते हैं। जब तक कि वे आराम कर उठते हैं। घर सूना हो जाता है। घर में कोई नहीं है। फिर वे आशा करते हैं कि बच्चे स्कूल से आकर गले मिलेंगे। वह भी नहीं होता। उनको पता चलता है कि जिन पोतियों को उन्होंने तीन साल पहले देखा था, वे बिल्कुल बदल गए हैं। पोतियाँ अपने-अपने कार्यों में सदा व्यस्त रहती हैं। उनके आने पर बच्चियों को उनसे मिलने का न तो उत्साह है और न ही आग्रह। बेटे और बहू की व्यस्तता उन्हें इनके साथ समय बिताने नहीं देती। बच्चियाँ अपने अध्ययन और निजी बातों में व्यस्त रहती हैं। वे भी अपने आप में स्वतंत्र हैं। दादा-दादी निराश हो जाते हैं। पोतियों के साथ प्रसन्नता से जीने का उनका मोह मोहमात्र रह जाता है। माँ-बाप की प्रेरणा से बच्चियाँ कृष्ण, राम और गाँधीजी की कहानियाँ सुनने तत्पर होते हैं, जो उनके लिए सिर्फ कहानियों के सिवा कोई मायने नहीं रखतीं। तीन महीने की अवधी पूरी कर जब दादा-दादी भारत लौटने की तैयारी करते हैं तो भी पोतियों को कोई गम नहीं होता और ही उन्हें रोकने की चेष्टा करते हैं।

जब दादी उनसे कहती है–हम नेक्टवीक इंडिया वापस चले जाएँगे, केका।" उसने समझदारी से गरदन हिलाते हुए कहा – "या आय तो.....

वैसे भी गेस्ट लोग तो दो-तीन दिनों तक ही सकते हैं।

बदलते पारिवारिक संबंधों को बखूबी से इस कहानी में खींचा गया है।

जैसे–"तब वह छह की थी, नौ की हुई। लेकिन नौ की तो हुई है। लेकिन नौ की केका इतनी बड़ी कैसे लग रही है। पिछली बार का सबकुछ भूल गई।"

मानू–"क्या इंडिया में मेरे भी ग्रैण्डपा का फार्म हाऊस है?..... क्या उनके फार्म हाउस के बाडे में भी घोड़े और पिग्स के पिंक पिंक बच्चे हैं।"

टूटते पारिवारिक संबंध के मूल में यही पाश्चात्यकरण है जहाँ पति-पत्नी पैसे कमाने की होड़ में न तो अपने वृद्ध माता-पिता का ख़याल रख पाते हैं और न ही अपने बच्चों को प्यार दे पाते हैं। बच्चे भी माता-पिता की व्यस्तता से परिचित हैं और वे भी अपना निजी जीवन जीना सीख जाते हैं, स्वतंत्र चेता हैं। सेंटिमेंट्स के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं है। सब कुछ यंत्रवत् चलता है। सुबह उठना, ब्रेक फास्ट और लंच का डिब्बा तैयार करना, दफ़्तर-स्कूल जाना, लौटकर बच्चे अपना होमवर्क कर या अपनी हॉबीस में मग्न.....घड़ी के मुताबिक सब कुछ चलता है। भावुकता केलिए कोई गुंजाइश ही नहीं।

सूर्यबाला जी ने इसे बड़ी तन्मयता एवं मार्मिकता से अणु परिवार की इसस्थिति का वर्णन किया है।

'रेस' कहानी में एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है, जो अपने कैरियर के लिए बोस की चापलूसी करता है। अन्य कर्मचारियों के प्रति उसके मन में कोई लगाव नहीं है। उनके प्रति न तो हमदर्दी है और न ही आत्मीयता। दिखावे का जीवन जीने वाला यह सोफिस्टिकेटेड पुरुष सुधीर शुक्ला अन्यों से आगे बढ़ने केलिए उनकी कमियों एवं कर्मचारियों को अपने बोस तक पहुँचाने में कोई कदर नहीं छोडता। अपनी कामयाबी को बढ़ा-चढ़ा कर कहने में भी उसे झिझक नहीं है। उसकी पत्नी कॉलेज अध्यापिका राशि को अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है ताकि वह घर-बार संभाले, अपने उच्च अफसरों की खुशामद एवं अवभगत कर। समाज में अपने को ऊँचा दिखाने केलिए अपने इकलौते पांच साल के बेटे को बोर्डिंग स्कूर में भर्ती करने की बात सुनकर राशि नाराज़ होती है, तो वह कहता है "कल सुव्रत का अपना एक कैरियर यह भी होगा कि वह शुरू से आखिर तक बैलहम और मेयो जैसे खर्चीले एरिस्टोक्राटिक क्लास के स्कूलों में पढ़ा है।" राशि दुःखी होकर कहती है – "पर मैं तो उसके बचपन को बाँहें भर-भर कर समेटना चाहती हूँ, सुधीर। कुटों, बिल्लियों, खरगोश, कबूतरों, फूलों, तितलियों के पीछे भागता, किलकता बचपन प्लीज़। अभी उसे कैरियर के बंदिरों में मत लांधो।"

दिन-रात नौकरी करते-करते सफलता हासिल करते-करते वह बी.पी. का पेश्यंट बन जाता है। उसका स्वास्थ्य गिरने लगता है। लेकिन उसे इसकी चिंता बिलकुल नहीं रहती। जब उसे निजी स्वास्थ्य की चिंता होती है, तब इतनी देर हो जाती है कि वहाँ से वापस आना नामुमकिन होता है। धीरे-धीरे उसके सब पोर्टफोलियो अन्य अफसरों को बांट दिये जाते हैं। अश्रांत परिश्रमी वह निराशा एवं कुंठा से इस कदर पीड़ित हो जाता है कि ऑफिस में ही दिल का दौरा पड़ जाता है और मृत्यु हो जाती है।

यह भागदौड़ और आपसी होड़ भूमंडलीकरण की सबसे चिंताजनक बात है जो विशेषकर आई.टी.फील्ड के कर्मचारियों में वर्तमान काल में देखा जा रहा है। मनुष्य पॉवर को कमकर कंप्यूटरीकृत पॉवर को बढ़ाने के दौरान कई लोगों की नौकरी नष्ट हो रहे उस काल में हमदर्दी एवं सहानुभूति कम होती जा रही है। सर्वैवल ऑफ द फिटेस्ट को मानकर अपने अस्तित्व की सुरक्षा ही सबके लिए मुख्य है। 'रेस' का सुधीर इसी वर्तमान पीढ़ी का प्रतीक है। इससे समाज की रक्षा करना, युवा पीढ़ी को यह जताना कि ओहदे एवं धन के पीछे दौडते-दौड़ते ऐसा न हो कि उसे अनुभव करने के लिए व्यक्ति ही न रहे यही सूर्यबाला इस कहानी द्वारा संप्रेषित करना चाहती हैं।

♦ पूर्व प्राचार्य,
सरकारी आर्ट्स कॉलेज,
तिरुवनंतपुरम।
फोन : 9446175924

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.21 के आगे)

8.प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन कब संपन्न हुआ ?

(अ) 1949 (आ) 1975

(इ) 1983 (ई) 1976

9. मारीशस की राजधानी का नाम क्या ?

(अ) सूरीनाम (आ) पोर्ट लुई

(इ) गयाना (ई) मॉरीशस

10.अभिमन्यू अनत किस देश के साहित्यकार हैं ?

(अ) फिजी (आ) जोहन्नासबर्ग

(इ) मॉरीशस (ई) सूरीनाम

11. महात्मा गाँधी संस्थान कहाँ स्थित है ?

(अ)वर्धा (आ) मॉरीशस

(इ)दिल्ली (ई) चेन्नै

12. महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय कहाँ स्थित है?

(अ)वर्धा (आ) मॉरीशस

(इ)दिल्ली (ई) कोलकत्ता

13.महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना कब हुई ?

(अ) 1975 (आ) 1997

(इ) 1949 (ई) 1994

14.'प्रवासी संसार' के संपादक कौन हैं?

(अ) अशोक मिश्र (आ) गजेन्द्र सोलंकी

(इ) राकेश पांडेय (ई) अशोक चक्रधर

(शेष पृ.सं. 44)

असंगघोष की कविता दलित प्रतिरोध के नए तेवर

◆ डॉ.जयकृष्णन. जे

'खामोश नहीं हूँ मैं', 'हम गवाही देंगे', 'मैं दूँगा माकूल जवाब', 'समय को इतिहास लिखने दो', 'ईश्वर की मौत' जैसे अपने काव्य संकलनों से हिन्दी कविता में अपनी अलग पहचान बनानेवाले कवि असंगघोष का जन्म सन् 1962 में मध्यप्रदेश के कस्बा जावद के एक दलित परिवार में हुआ। निजी अनुभवों से अंकुराती उनकी अधिसंख्य कविताएँ दलित चेतना से जुड़ी हुई हैं। आसपास के परिवेश से ये कविताएँ विकसित होती हैं। अपने आभ्यंतर को उजागर करनेवाली इन कविताओं द्वारा कवि दलितों की दुर्व्यवस्था और उनकी आत्मपीड़ा को उभारता है। इसके ज़िम्मेदार लोगों के प्रति अपना रोष भी प्रकट करता है। असंगघोष की कविता दलित वर्ग की ज़िन्दगी और उसके परिसर की कविता है। चातुरवर्ण्य दलितों के खिलाफ बनाई गई पहली साज़िश है। अमानवीयता का पोषण करनेवाली भारत की मानव निर्मित जाति व्यवस्था में उनको कई प्रकार की यातनाएँ भुगतनी पड़ी हैं। धर्म और जाति के नाम पर भेदभाव को बनाए रखनेवालों तथा लोगों को अपने पैरों तले दबानेवालों पर कवि व्यंग्य बाण कसता है। दुख और यातना दलित जीवन का तानाबाना है। गुलामी और अंधविश्वास के भँवर में वह फँस गया है। शोषण की चक्की में वह बुरी तरह पिस रहा है। यातनाओं की आग में वह झुलस रहा है। 'काट डालूँगा उन पैरों को' कविता की पंक्तियाँ देखें -

"अछूत एक घाव है
तुम्हारा ही दिया हुआ
जो नासूर बनकर
तेरी ही सड़ी वर्ण व्यवस्था से
असहनीय पीड़ा देता हुआ
लगातार रिस रहा है।"(हम गवाही देंगे, पृ 56)

हमारा समाज इक्कीसवीं सदी में भी जड़, क्रूर और पुरातनपंथी बना हुआ है। समाज की इस जड़ता से टकराने का दायित्व कवि खुद ले लेता है। असंगघोष की कविता ब्राह्मणवादी व्यवस्था के शिकंजे में दबे दलितों की व्यथा कथा है। उनकी कविता दलितों के शोषण और दमन का जीवन्त दस्तावेज़ है। इसमें पूरे दलित समाज की जीवन गाथा प्रस्तुत है -

"मेरे पुरखे
अपने पेट की आग बुझाने
मरे जानवर की खाल से
तथाकथित द्विजों के पाँव को
विबाई फटने से बचाने
बनाते थे चरणपादुकाएँ
खुद नंगे पाँव रहकर।" (खामोश नहीं हूँ मैं ,पृ. 66)

समाज के निम्न स्तर के लोगों को कहीं भी न्याय नहीं मिलता है। न्याय के देवता जन साधारण के पक्षधर नहीं हैं। थाना और अदालत अमीरों के हित केलिए बनाए गए हैं। वे वर्ण व्यवस्था के पोषक हैं और अमीरों के हिमायती हैं। दलितों पर सवर्णों के द्वारा होनेवाले अन्यायों और अत्याचारों पर प्रश्न करनेवाला कोई भी नहीं है। उन्हें जातिवाद की बेड़ियों में जकड़ा जाता है। मासूम औरतों को बलात्कार करके उनकी कोख में अन्याय के बीज बोये जाते हैं।वाह क्या न्याय है कविता में एक दलित स्त्री की अस्मत लूटी जाती है। पुलिस स्टेशन में वह शिकायत करती है। बलात्कारियों के नाम दर्ज कर दिए जाते हैं। अदालतों में बोर्ड पर काले मोटे अक्षरों में 'सत्यमेव जयते' लिखा गया है। लेकिन यहाँ सच की जीत नहीं होती है। जब मुकदमे के फैसले का वक्त आया, तो दर्ज बयानों में बलात्कार की बात ही नहीं थी। भारत की न्याय व्यवस्था में जीत सच्चाई की नहीं होती,बल्कि अमीरों की होती है। कवि इस न्याय व्यवस्था की खिल्ली उठाता है-

"इस तरह
सत्य की विजय हुई
देशभक्ति पूरी हुई
दरोगा को भी
जनसेवा का प्रसाद मिला
सार्थक हुआ सत्यमेव जयते लिखा।" (हम गवाही देंगे, पृ 92)

वरेण्य वर्ग ने सामाजिक और धार्मिक जीवन की संरचना रची,ताकि बहुसंख्यक लोग हाशिए पर धकेल दिए गए। असंगघोष की कविता इन हाशिएकृतों की आवाज़ है। 'अंतर क्यों' शीर्षक कविता में ब्राह्मणवाद पर करारा व्यंग्य है। ब्राह्मण सदियों से दलितों की पीठ पर कोड़े बरसाकर उनकी खाल उधेड़ रहा है। दलित भी ब्राह्मणों की सेवा में मरे जानवरों को ढ़ोकर खाल उतारकर चरण पादुकाएँ बनाता है। असंगघोष की कविता जाति और धर्म के नाम पर होनेवाले तमाम शोषण, अनाचार और क्रूरता की बात करती है। अपने समाज को जाति भेद के चंगुल से मुक्त करना और सामाजिक समानता की स्थापना करना दलित साहित्य का उद्देश्य है। वह एक नए समाज का निर्माण करना चाहता है, जहाँ दलितों को भी मानवाधिकार प्राप्त होता है। एक लंबे अरसे के बाद आज दलित यह कहने की स्थिति तक पहुँच गए हैं कि हम भी अपने मुँह में ज़बान रखते हैं। बोलने का मतलब है, भाषा की दुनिया में पैदा होना। सामाजिक समानता केलिए खुला संघर्ष करने की ताकत दलितों में मौजूद है। अपने अनथक प्रयासों व आन्दोलनों से उनमें आत्मविश्वास जाग उठा है। दलित अपनी अस्मिता को पहचानने लगे हैं। जातिविहीन समाज की कामना दलित कविता की विशेषता है। जाति खेतों में पैदा नहीं हुई है। गमलों में खिली नहीं है। किसी पेड़ के फल से पल्लवित नहीं हुई है। कारखाने में निर्मित नहीं हुई है। यह सवर्णों द्वारा बोये बबूल के काँटों की नोक पर बनी है। इसी कारण लोगों को पीड़ाएँ और यातनाएँ सहनी पड़ी हैं। इसके प्रति अपना प्रतिषेध प्रकट करते हुए कवि यही चेतावनी

देता है -

"तुम नहीं काटोगे
अपने बोये बबूल
मुझे ही डालना होगा मट्ठा
तुम्हारी और इसकी जडों में।" (खामोश नहीं हूँ मैं, पृ .49)

जाति और धर्म को लेकर जितना स्पष्ट और गहरा विमर्श दलित साहित्य में है,उतना अन्यत्र नहीं है। दलित साहित्य जाति और धर्म की बुनियाद को उखाड़ फेंकने की क्रांतिकारी चेतना और चेष्टा से भरा हुआ है। कवि व्यवस्था के आतंकवादियों को ललकारता है। जातिवादियों की संवेदना लुप्त हो गई है। सारी मानवीय करुणा झुलस गई है।कवि सीना तानकर जुल्म से मुकाबला करने खड़ा है। जिस समाज का एक व्यक्ति निहत्थे ही खड़ा हो जाए,तो जुल्म के अन्त की शुरूआत होती है।

"अब भ्रम में न रहो
कि हमारे पास कुछ नहीं
हम निहत्थे ही सही/सामना करेंगे
तुम्हारी लाठी- गोलियों का।"(हम गवाही देंगे, पृ 35)

आज दलितों में नई चेतना जाग्रत हो उठी है। अपने अधिकारों व हैसियत से वे अवगत हो गए हैं। दलित सदियों से जो यातनाएँ सहते आ रहे हैं,इन्हें आगे सहने केलिए वे मंजूर नहीं हैं। शताब्दियों से अपने कन्धे पर ढ़ोती आ रही यंत्रणाओं के खिलाफ़ आवाज़ उठाने को वे कटिबद्ध हो गए हैं। वे डटकर सवर्णों का सामना करते हैं और उनको चेतावनी भी देते हैं। 'रोको ब्राह्मण' कविता में भी इसी जाग्रति और चेतावनी का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है। वेदमंत्र पढ़ना शूद्रों को निषिद्ध था। यदि शूद्र वेद सुनता, तो उसके कानों में शीशा पिघलाकर डाल देता। इस धर्म व्यवस्था को कवि यों ललकारता है-

"तुममें हो हिम्मत तो
डालो गर्मगर्म पिघला शीशा
मेरे कानों में
मैं ने तुम्हारे ऋग्वेद की
ऋचाएँ पढ़ीं और सुनी हैं
रोको ब्राह्मण
रोक सको तो" (खामोश नहीं हूँ मैं, पृ.66)

दलित कविता मिथकों को नकारनेवाली कविता है। शंबूक, कर्ण, एकलव्य आदि मिथकीय पात्र यहाँ दलितों के विद्रोह के प्रतीक बनते हैं। एकलव्य ने द्रोणाचार्य को गुरुदक्षिणा के रूप में अपना अंगूठा काटकर दिया।उस समय एकलव्य ने द्रोण की आँखों में छाई धूर्तता और मूँछों में छिपी कुटिल मुस्कान देख नहीं पायीं। उसी प्रकार कर्ण ने अपने कवच-कुंडल दान देने से पहले कृष्ण की कूटनीति समझ नहीं पायी। द्रोण की कुटिलता के कारण एकलव्य को अपना अंगूठा खोना पड़ा। लेकिन फिर भी एकलव्य निराश नहीं है। वह कभी अपने हार को स्वीकारनेवाला नहीं है। लड़ने की ताकत उसमें शेष रहती है। व्यवस्थावादियों की साज़िश के प्रति वह सतर्क रहता है। उससे नई ऊर्जा प्राप्त करके वह कहता है-

"मेरी तर्जनी और मध्यमा में
अभी भी लड़ने की

बहुत शक्ति बची है
और
तुम करते रहो अफसोस
कि
अंगूठे की जगह तुमने
क्यों नहीं माँगा
जड़ से मेरा हाथ।" (मैं दूँगा माकूल जवाब, पृ.35)

दलित कविता भगवान के अस्तित्व को नकारती है। भगवान भी अमीरों और सवर्णों के हैं। जालिमों के पाले में भगवान भी गरीबों के खिलाफ़ मुस्कुराते खड़े रहते हैं। दिये की रोशनी में चमकनेवाले, हाथों में नाना प्रकार के शस्त्रधारी भगवान भी गरीबों के सहायक नहीं हैं। दलितों पर होनेवाले अत्याचार को भगवान भी रोकते नहीं हैं।कवि के विचार में अगर ईश्वर मानवीय होता तो मंदिर से बाहर निकलता, दीवार पर छपे वाक्य 'शूद्र मंदिर में प्रवेश न करें' पढ़ता, फिर मंदिर में नहीं घुसता और मेहनतकश लोगों के साथ मिलकर परिश्रम करने लगता। ईश्वर की निरुपायता व्यक्त करते हुए कवि कहता है-

"किसी भी रोशनी में
कभी भी दिखाई नहीं दिए
शिखाधारियों के
षडयंत्रों को रोकते
दलितों पर होते दमन को थामते
शस्त्रधारी पत्थरदिल भगवान।" (खामोश नहीं हूँ मैं, पृ.51)

केविन कार्टर एक फोटो पत्रकार था। उसका एक फोटो बहुचर्चित और विवादास्पद हो गया। उस फोटो में गिद्ध एक घिसटते हुए कमज़ोर भूखे बच्चे की ओर देख रहा है।इस फोटो केलिए वह पुरस्कृत हुआ था।लेकिन केविन कार्टर को बच्चे की मदद करने के बजाय फोटो खींचकर वहाँ से चले जाने पर काफी आलोचना झेलनी पड़ी। सन1994 में केवल 33 वर्ष की आयु में अवसादग्रस्त होकर उसने आत्महत्या कर ली। 'तुम देर से क्यों मरे' कविता की पंक्तियाँ हैं-

"क्या वहाँ सिर्फ
तुम तीन ही थे
तुम,वल्वर और वह अनाम सुडानी प्राच्चा
क्या भगवान भी था
अगर था भी
तो कैसा था
गूँगा बहरा
या फिर अंधा" (मैं दूँगा माकूल जवाब, पृ.17)

दलित कविता में दलितों की पीड़ा,यातना और शोषण की सही अभिव्यक्ति है। दलितों को शिक्षा के अधिकार से, धन-धरती के अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। इस सामाजिक अन्याय के खिलाफ़ बहुत सारे विरोध प्रकट किए गए हैं। वर्णवादियों के अहंकार तले बेगार करते सदियों से अधूरे जीवन जीते लोग जातिवादी मकड़जाल से मुक्त हो जाना चाहते हैं। 'मैं दूँगा माकूल जवाब' शीर्षक कविता में कवि कहता है कि जातिवादियों ने मेरी जिह्वा काट ली। मेरे होंठ सिल दिए।कानों में पिघला हुआ शीशा उंडेल दिया। आँखों में गर्म सलाखें घुसेड़ी गईं। लेकिन आनेवाली पीढ़ी इस अन्याय को सहेगी नहीं। समय के बदलने के साथ लोगों के विचारों में भी बदलाव आया है। दलित

शिक्षा के महत्व को पहचानने लगे हैं। वे शिक्षित होकर आत्मसम्मान के साथ जीना चाहते हैं। शिक्षा के द्वारा ही दलितोत्थान संभव है। शिक्षा ही वह औजार है जो दलितों के अन्तर्नेत्र को खोल देती है। यह मुक्ति का पथ प्रशस्त करती है। दलितों की नई पीढ़ी अज्ञान,गुलामी और दमन के अन्धकार से ज्ञान,आत्म पहचान और स्वातंत्र्य की रोशनी की ओर आ रही है। दलितों को शिक्षा से दूर रखने के जो षड़यंत्र व्यवस्था के नाम पर रचे गए हैं,यह कविता उनके लिए एक माकूल जवाब है-

"तुम्हारी इस करनी पर
मेरी धमनियों में
खौल रहा है, बहता लहू
समय के साथ
इसका
मैं दूँगा माकूल जवाब
मेरी जगह
पढेंगे मेरे बच्चे
ज़रूर " (मैं दूँगा माकूल जवाब, पृ.37)

असंगघोष की कविता दलितों के उत्पीड़न को ही नहीं,बल्कि उनके प्रतिशोध को भी शब्दबद्ध करती है। उनकी कविता में संघर्ष के बीज पूरी तरह मौजूद हैं। उनकी कविताएँ ऐसी भी हैं जो अपने समय से भी होड़ लेने की मंशा ज़ाहिर करती हैं। कुछ कविताएँ मनुष्य की जातीय कट्टरता की ओर इशारा करती हैं। आदमी आदमी को काटता है। तब खून नहीं,हैवानियत बहती है। जात का नकाब ओढ़े धर्म अट्टहास करता है और इंसानियत बेमौत मारी जाती है। मरी गाय की खाल उतारने के अपराध पर दलित मारा जाता है। पेट काटकर भ्रूण हत्या की जाती है। इस प्रकार आतंक और बर्बरता की पराकाष्ठा का चित्र भी उनकी कविता में उकेरा गया है। अस्पृश्यता और जातीय नीचता के अभिशाप को भोगनेवाले कुचले और रौंदे हुए दलित समुदाय सब कहीं हाशियेकृत और तिरस्कृत हो गया है। इन पार्श्वीकृतों के जीवन का सही बयान और उनके विद्रोह, संघर्ष, प्रतिशोध,प्रतिरोध और प्रतिषेध का सशक्त अंकन असंगघोष की कविता को अपनी अलग पहचान दिला देता है।

♦ असिस्टेंट प्रोफसर,
हिन्दी विभाग,
यूनिवर्सिटी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम,केरल- 695 034
फोन : 9446462321

श्रद्धांजली

02/10/2018 मंगलवार को अकाल में गुज़र गये केरलीयों के प्रिय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वीणा वादक, संगीत निदेशक तथा विस्मिल्लाखान युवा संगीत पुरस्कार(2008) विजेता श्री बालभास्कर को अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी के सदस्यों की हार्दिक श्रद्धांजली।

'कथा एक कंस की' नाटक में अभिव्यक्त संवेदनात्मक त्रासदी

• डॉ. जयश्री ओ.

समकालीन रंगमंच के प्रख्यात नाट्यशिल्पी हैं श्री. दयाप्रकाश सिन्हा । हिन्दी के ही नहीं समस्त भारतीय नाटककारों में आप अकेले लेखक हैं जो अपने हर नाटक केलिए एक नया फॉर्म या ढांचे की तलाश करते हैं । यह अनवरत तलाश सहज प्रयोग या नयेपन की ललक है । 'कथा एक कंस की' आपका एक राजनीतिक व्यंग्य नाटक है, जिसका आधार पौराणिक है । मिथक की भावभूमि पर लिखे हुए इस नाटक की रचना सन् 1976 में हुई। लेकिन मानव, समाज और सत्ता की मूल प्रवृत्तियों को उद्घाटित करनेवाली यह कृति कालातीत बन गयी है।

सिन्हाजी ने 'कथा एक कंस की' नाटक की रचना पुराण के कंस और कृष्ण की कथा को लेकर की है। इस नाटक का नायक मथुरा का महाराज कंस है। उसकी पत्नी मगध नरेश जरासन्ध की पुत्री अस्ति है। कंस अपने ससुर की सहायता से पिता उग्रसेन को बन्दी बनाकर राजसत्ता छीन लेता है । सत्ता की होड़ में पड़कर वह अपनी चचेरी बहन देवकी, उसके पति वसुदेव, अपनी पत्नी अस्ति, प्रेमिका स्वाति, सेनापति प्रद्योत और प्रलंब सबको अपने से अलग कर देता है। स्वाचेछाचारी कंस किसी पर विश्वास न करता था। सेनापति प्रद्योत पर विश्वास न होने के कारण अपनी प्रेमिका स्वाति को उसकी पत्नी बनाता है। अपने पिता के जारज पुत्र प्रलंब अपने से अधिकार छीन लेगा, इस भय से कंस उसे बन्दी बना देता है । लेकिन सत्ता की मदिरा से उन्मत्त कंस हमेशा मृत्यु की डर से निद्राविहीन बन जाता है । इसका कारण एक आकाशवाणी है - 'अपनी बहिन देवकी के आठवें पुत्र के हाथों से अपनी मृत्यु हो जाएगी'। स्वाति के मत में यह आकावाणी नहीं वह तो कंस के भयभीत हृदय की वाणी है। इस भय से वह अपनी बहिन को कारागार में डालता है। उन्हीं के नवजात शिशुओं को ही नहीं, मथुरा तथा आसपास के गाँवों के बच्चों को भी अपनी प्रेमिका स्वाति की सहायता से मार डालता है । जब उसे खबर मिलता है कि उसका शत्रु नन्द के घर में सुरक्षित है तब उसे मारने केलिए स्वाति को भेजता है। किन्तु कृष्ण को मारने केलिए विष लेकर चलनेवाली स्वाति ईसी विष को खाकर आत्महत्या करती है । अंत में कंस अपनी पत्नी अस्ति को मार डालता है । उसी प्रकार अधिकार की होड़ में हुए कंस का साथ देता है केवल मृत्युभय ।

अबोध बालपन में पिता से अपमान, लांछन, तिरस्कार एवं उपहास ही मिले-"मेरा यह पुत्र पुरुष के वेष में स्त्री है ! स्त्री!"[1] इसकी प्रतिक्रिया ने ही कंस को ऐसा निर्मम एवं क्रूर बना दिया है । उसे निर्ममता, हिंसा, हत्या, रक्तपात और क्रूरता को पुरुषत्व का अलंकार मानना पड़ा। यही नहीं, अपने पिता तक को

घुटने टेकने और गिड़गिड़ाकर क्षमा-याचना केलिए विवश कर देता है। वह प्रतिशोध और महत्वकांक्षा ऐसी विकराल यात्रा पर निकल पड़ती है, जिसमें उसे व्यापक हत्याकांड और अत्याचारों के साथ-साथ सखी प्रेमिका स्वाति को बलि देने और पत्नी अस्ती की अपने हाथों हत्या करने में भी उसे संकोच नहीं होता। उसका दुर्दमनीय उद्दीप्त अहं स्वीकार करता है कि "जो मेरा गर्व सहन नहीं कर सकता, चाहे वह पत्नी हो, मित्र हो, बहन या पिता हो। उसे नष्ट होना ही है।"[2] इस प्रक्रिया में वह कहीं स्वयं घायल हो जाता है और दूसरों केलिए बनाए नरक में वह स्वयं जलने लगता है। हत्याओं के इस लम्बे सिलसिले के अंतिम छोर पर पहुँचते वक्त उसे ऐसा लगता है कि प्रत्येक हत्या आत्महत्या है और प्रत्येक अत्याचार आत्मयंत्रणा। वास्तव में विवेच्य नाटक का मूलतत्व कंस और कृष्ण का बाह्य संघर्ष नहीं, बल्कि कंस के भीतर की सद् और असद् वृत्तियों के द्वन्द्व की कथा है। एक कलाप्रिय, भावुक, सुन्दर एवं करुण-कोमल स्वभाववाले सामान्य व्यक्ति कंस के क्रमशः महाराजा कंस और भगवान कंस बनने की उलझी हुई प्रक्रिया का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन ही यहाँ हुआ है।

नाटककार ने कंस और कृष्ण की पौराणिक कथा को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से रूपायित किया है। द्वापर युग की उस कथा ने देश और काल की सीमाओं को तोड़कर मानव-जीवन के कुछ शाश्वत प्रश्नों और उसके मनोविज्ञान की विडम्बनाओं की असलियत को नाटकीय रूप प्रदान किया है । इसमें नाटककार सिन्हाजी ने कंस के बहाने किसी भी व्यक्ति के मानव से दानव बनने की प्रक्रियाओं का मार्मिक आकलन किया है। कंस आज के सत्ताधारी शासक वर्ग का ही नहीं अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने के कारण शत्रुओं की आशंका से अनिद्रा रोग से पीड़ित आधुनिक मानव का भी प्रतीक है। एक निरंकुश शासक यदि क्रूर है तो उस क्रूरता के मूल में अवश्य भय होता है। यही भय इस नाटक को आदि से अन्त तक जीवन्त बनाए रखता है । कंस को कृष्ण से भय है। वास्तव में कृष्ण इस नाटक का प्रत्यक्ष पात्र नहीं है, लेकिन भयातुर कंस निरन्तर उसकी आवाज़ सुनता रहता है। उसके वंशीनाद से वह भयाक्रान्त होता है।

सत्ता का तर्क अत्यंत क्रूर होता है। सत्ताधारी के चारों ओर भय और संशय का घेरा जैसे-जैसे जकड़ता जाता है, वैसे-वैसे ही वह अकेला हो जाता है। न उसका कोई मित्र है और न सहायक और न कोई विश्वासक। उसका लक्ष्य केवल सत्ता है। वह किसी को अपने मार्ग का कांटा बनने नहीं देता, वह चाहे पिता हो पत्नी हो या प्रेयसी, उन्हीं की जड़ें उखाड देगा। यही सत्य कंस के चरित्र द्वारा सिन्हाजी ने प्रस्तुत किया है। वह सबको भयाक्रान्त दृष्टि से देखता था। इसलिए ही कंस अपने राज्य में संगीत, नृत्य, ईश्वराराधना सब बन्द कर देता है । सभी कलाओं पर रोक लगानेवाले कंस स्वयं अपना ही मन्दिर बनवाता है और उसमें पूजा करने केलिए पुजारी की नियुक्ति भी करता है।

आत्मसत्ता के विस्तार की दुर्दमनीय आकांक्षा के सामने मानवीय अनुभूतियाँ सदा केलिए दमित होती हैं। इस तथ्य का उद्घाटन सिन्हाजी ने अत्यंत मार्मिक ढंग से किया है। अपनी चचेरी बहन देवकी के आठवें पुत्र के द्वारा अपनी मृत्यु हो जाए, ऐसी आकाशवाणी सुनने के कारण कंस ने देवकी को कारागार में डाला।

उस समय के भीषणतम आन्तरिक द्वन्द्व का चित्रण लेखक ने बहुत मार्मिक ढंग से किया है - "मनुष्य शरीर की कुछ सीमाएँ हैं। वह आकाश में कितना ही ऊँचा क्यों न उठता जाये, उसके पैर धरती पर रहते हैं। मरुस्थल के नीचे भी कहीं न कहीं शीतल जल का भंड़ार होता है कँटीली झाड़ियों में भी फूल खिलते ही हैं। मैंने सब बन्धन काट दिये, सबके बन्धन तोड़ दिये। फिर भी लगता है कुछ संबन्ध टूटकर भी तो नहीं टूटे।"[3] एक ओर बहिन केलिए सहज मानवीय अनुराग, दूसरी ओर आत्मसत्ता विस्तार की दुर्दमनीय आकांक्षा की क्रूर माँग-इन दो विरोधी भावनाओं के बीच फंस गये कंस के द्वारा लेखक इस बात पर बल देते हैं कि एक सत्तामोही के संबन्ध में मानवीय अनुराग या अपनी संवेदनाएँ सत्ता के अधीन मात्र हैं।

कंस के जीवन की त्रासदी और विडम्बना यह है कि वह अपने शत्रु को बाहर खोजता हुआ भटकता है। वास्तव में उसके असली शत्रु भय, आशंका, प्रतिरोध, घृणा और अविश्वास है जो उसके भीतर ही विद्यमान है। सत्ता का नृशंस खेल खेलते हुए भी उसको बार-बार शंकित दिखलाया गया है; हत्याओं के दौर से गुज़रने के बाद भी वह उनकेलिए अपने को अन्दर ही अन्दर उत्तरदायी मानता है। यही नहीं, वह नितान्त अकेलापन का अनुभव करते समय भी अपने भीतर की समस्या का हल बाहर खोजता ही रहता है। खोजना कभी कारगर नहीं होता और वह अमर 'खेल' जैसा चलता ही रहता है। कंस के ही शब्दों में - "कंस का अत्याचार करना और जनता का अत्याचारों से छूटकारा पाने का सपना देखना-हम दोनों ही खेल के नियमों से बद्धे हैं ।"[4]

'कथा एक कंस की' नाटक के सभी पात्रों के ज़रिए सिन्हाजी ने मनुष्य जीवन की त्रासदी - उसकी लाचारी, विवशताओं, सीमाओं, संवेदनाओं तथा मानसिक अतर्न्द्वन्द्व का यथातथ्य चित्रण बहुत अधिक मार्मिक ढंग से किया है। कंस की प्रेमिका स्वाति अपने प्रेमी को संतुष्ट करने केलिए मथुरा तथा आसपास के भोले-भाले बच्चों को मार डालने में कंस की सहायता करती है। लेकिन अंत में उसका मातृत्व उसके मन की पाश्विक वृत्ति को परास्त कर देता है। कृष्ण को मारने का विष स्वयं खाकर वह आत्महत्या कर लेती है। कंस की पत्नी अस्ती आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति है। वह अपने प्रेम में प्रतिदान की कामना त्याग नहीं सकती। वह अवहेलना सह नहीं कर पाती। राजसी गर्व और आत्मसम्मान उसके चरित्र की विशेषताएँ हैं, जिसका टकराव एक स्वेच्छाचारी शासक के अस्म से होता है उसमें वह पराजित होती है, मार दी जाती है।

सत्ता रूपी मीनार के शिखर पर इतना कम स्थान होता है कि वहाँ केवल एक व्यक्ति ही एक समय खड़ा हो सकता है। स्वेच्छाचारी शासक उस शिखर पर चढ़ते-चढ़ते अपने हर साथी को कहीं-न-कहीं नीचे छोड़ता है। बाद में वही साथी ही उसे शिखर से नीचे ढकेलता है। इस तथ्य को उजागर करने में लेखक ने प्रद्योत और प्रलंब जैसे पात्रों की सृष्टि की है।

इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो हमें पता चलेगा कि आत्म-सत्ता के विस्तार की उद्दाम आकांक्षाओं से पीड़ित व्यक्ति केवल उसी मार्ग पर ही आगे बढ़ता रहेगा । किसी भी शक्ति से उसका उद्धार संभव नहीं है। यहाँ नाटककार सिन्हाजी कंस के माध्यम से इस तथ्य को उजागर करते हैं कि स्वेच्छाचारी शासक समय-

समय पर, औरेंगज़ेब, हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन, सद्दाम हुसैन जैसे अनेक नामों पर मंच पर आते रहते हैं। वे सब अपने को स्वयं एक दुनिया माननेवाले हैं । वे संवेदनहीन होकर सत्ता के अधीन बनते हैं। उसका नतीजा तो केवल आत्मनाश ही है। क्योंकि वे सब इस प्रकार माननेवाले हैं - "हमारी इच्छा आदेश है। हमारा आदेश नियम है। हमारे विरुद्ध जो सिर उठायेगा उसका सिर काट दिया जायेगा । जो आँख दिखलाएगा उसकी आँख निकाल ली जायेगी । हम अपराजेय हैं - हम महाबली ... पराक्रमी ... परमतेजस्वी .....।"[5] यहाँ सिन्हाजी केवल एक 'वंशीनाद' से इन्हीं लोगों को यह चेतावनी देते हैं कि ऐसी उद्दाम आकांक्षा की परिणति केवल आत्मनाश के सिवा और कुछ नहीं है। व्यक्ति मन के प्रत्येक पहलू को उजागर करने की कोशिश ही यहाँ हुई है । धन और अधिकार की अन्धी-दौड़ में पड़े स्वार्थी और महत्वाकांक्षी मानव मुड़कर देखने पर उनकी ज़िन्दगी में केवल यही बचता है - तनाव, कुंठा, संत्रास, अकेलापन, रिश्तों में दरार और पारिवारिक विघटन। स्वयं कंस के ही शब्दों में - "साधारण मनुष्य की असाधारण महत्वाकांक्षा की कथा। एक साधारण मनुष्य के भगवान बनने की कथा। एक धटकते हृदय के तपते लहू के ठंड़े होकर धीरे-धीरे पत्थर की तरह जमने की कथा - तिल तिलकर क्षण-क्षण मरने की कथा। जीवित ही मृत्यु-वरण की कथा।"[6] यों हम निस्सन्देह कह सकते हैं कि विवेच्य नाटक संवेदनाओं की त्रासदी है और इसमें युग-युग से जन्म लेते अनेक कंसों में से एक कंस की यह कथा अनेकों के परिप्रेक्ष्य में है। स्वयं लेखक की ही मान्यता है -"मैंने कंस के द्वारा उन व्यक्तितंत्री स्वेच्छाचारी शासकों का निर्माण और विनाश का अन्वेषण किया है जिनका समय-समय पर इतिहास के विभिन्न मोड़ों पर आविर्भाव हुआ है; चाहे वह कंस हो या औरेंगज़ेब, या हिटलर या मुसोलिनी। ऐसे व्यक्ति आत्म-सत्ता के विस्तार की उद्दाम आकांक्षा से पीड़ित उस मार्ग पर बढ़ते ही जाते हैं, जहाँ से लौटना संभव नहीं होता और जिसकी परिणति आत्मनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। शोर के सवार की भाँति वह अन्त तक शेर से उतर नहीं सकता। अन्ततः ऊपरी तड़क-भडक के बावजूद विवशता की घुटन अनुभव करते हैं, जो उनके जीवन की वास्तविक त्रासदी होती है । इस नाटक के द्वारा मैंने एक स्वेच्छाचारी शासक के उत्थान-पतन के अतिरिक्त उसकी महत्वाकांक्षा में निहित त्रासदी को पकड़ने की भी चेष्टा की है। यही नाटक की मूल संवेदना है।"[7]

आधार ग्रन्थ

कथा एक कंस की - दयाप्रकाश सिन्हा, राधाकृष्म प्रकाशन प्रा. लि., दरियागंच, नई दिल्ली।

संदर्भ :

1. कथा एक कंस की - पृ. सं. 35
2. वही ,, ,, पृ. सं. 80
3. वही ,, ,, पृ. सं. 73
4. वही ,, ,, पृ. सं. 70
5. वही ,, ,, पृ. सं. 84
6. वही ,, ,, पृ. सं. 35
7. कथा एक कंस की - भूमिका ।

♦ सहायक आचार्या,
हिन्दी विभाग
यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम-14।
फोनः 7907026388.

सिक्किम की यात्रा

• डॉ.शीबा शरत.एस

भारत के पूर्वोत्तर भाग में स्थित एक पर्वतीय राज्य है 'सिक्किम'। इसके पश्चिम में नेपाल, उत्तर तथा पूर्व में चीनी तिब्बत क्षेत्र तथा दक्षिण पूर्व में भूटान हैं। विभिन्न स्थानों की ऊँचाई समुद्री तल से 280 मीटर (120 फीट) से 8,585 मीटर (28000 फीट) तक है। कंचनजंगा यहाँ की सबसे ऊँची चोटी है, जो दुनिया की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है। यहाँ की जनसंख्या भारत के राज्यों में न्यूनतम तथा क्षेत्रफल गोआ के पश्चात् न्यूनतम है। इलायची सिक्किम की मुख्य नकदी फसल है। संपूर्ण भारत में सबसे अधिक उपज यहाँ होती है। सन् 2018 के अप्रैल महीने में मैं अपने परिवार के साथ वहाँ गई। हम कोलकत्ता से सिलगुरी जिले के बागड़ोगरा एयरपोर्ट पर पहुँचे। सिक्किम का बागड़ोगरा एक सैन्य हवाई अड्डा है। छोटा होने पर भी यहाँ बहुत हवाई जहाज़ आते-जाते हैं। एयरपोर्ट पर सिक्किम का ड्राइवर उदय हमें लेने आया। उसकी गाड़ी में बैठकर हम राजधानी गंगटोक की ओर रवाना हुए। सिक्किम का सबसे बड़ा शहर यही है। यहाँ की सड़क पर कहीं भी सिग्नलबत्ती नहीं। ऊबड़, टूटा हुआ, छोटी सड़क के दोनों ओर केरल जैसा नारियल के पेड़, कोको, आम के पेड़, केले के पेड़ आदि थे। जाते वक्त सर्दी हमें सताने लगी। एयरपोर्ट से गंगटोक चलने के लिए सड़क पर कम-से-कम पाँच या छः घंटे यात्रा करनी है। सीमा सड़क संगठन (बी.आर.ओ)- भारतीय सेना का एक अंग-इन सड़कों का रख-रखाव करता है।

शाम को एक तिब्बती हॉटल से चाय पीकर हमने यात्रा ज़ारी की। यहाँ के टटी हुई सड़कों को देखकर हम डर गये। पहाड़ टूटकर जो पत्थर बने थे, वे चारों ओर बिखरे पड़े थे। भूट्टान की ओर जानेवाले कोरोनेशन ब्रिज भी देखा। कुछ समय बाद हम कलिम्पोंग जिले पर पहुँचे। सर्दी अधिक लगने के कारण हमने दस्ताने पहने और वहाँ के एक हॉटल से गरम-गरम आलू परात्ते और पाव-बाजी खायीं। भोजनोपरान्त वहाँ से पेरमिट (Permit) लेकर ड्राइवर उदय ने गाड़ी चलाई। कई क्षेत्रों में प्रवेश निषेध है। और लोगों को घूमने के लिए पेरमिट लेना पड़ता है। रात को साढ़े दस बजे हम गंगटोक के केन्द्र सरकार की खूबसूरत होलीड़े होम (Holiday Home) पहुँचे। तब वहाँ का तापमान 2°C थे। हम सब ठिठुरने लगे।

अगले दिन हम 'नाथुला पास' जाने की तैयारी में थे कि तब ड्राइवर उदय और हमारे यात्रा प्रबन्धक डेनसिंह ने कहा कि ओले बरसने के कारण ITBP (Indo Tibetan Boarder Police) ने उस ओर की यात्रा के लिए रोकथाम डाला है तो हम स्थानीय सैर (Local Visit) के लिए निकले। उस समय का तापमान 1 ^{o}C था। हमने पहले 'गणेश टाक' जाकर

गणपति भगवान का दर्शन किया। फिर सीधे 'ताषि़ पोयिंट' पर गये। सिक्किम के लोग देखने में बहुत सुन्दर हैं। जहाँ भी देखे सुन्दर, शान्त चेहरे ही मिलते हैं। वे लोग हम जैसे पर्यटकों से आदर एवं विनम्र बर्ताव करते हैं। दूकान पर गये तो हमें अचरज हुआ कि वे लोग पैसा वापस देते वक्त श्रद्धा से दायें हाथ की टहनी पर बायें हाथ रखकर देते हैं। किसी भी चीज़ के लिए अधिक दाम नहीं लेते।

सड़क के चारों ओर सफ़ाई है। कहीं भी कूड़ा-कचड़ा नहीं। अगर कूड़ा डालना है तो निर्दिष्ट स्थान पर डालना है। यहाँ ओटोरिक्शा (Autoriksha) नहीं है। टु व्हीलर (Two Wheeler) कम है। लेकिन कम दाम पर Tourist Taxi चलती है। कीमती गाड़ी भी बहुत कम है। यहीं कहीं सड़क के दोनों ओर छोटे-छाटे झरनें हैं, इसलिए सब कहीं शुद्ध पानी की व्यवस्था है। ताषि़ पोयिंट पर खड़े होकर हमने सिक्किम का प्राकृतिक सौंदर्य देखा। फिर वहाँ से सीधे फ्लवर षो (Flower Show) बाग पर पहुँचे। वहाँ सर्दी के मौसम में पनपनेवाले कई रंग-विरंगे, विविध आकार एवं गंध के फूल थे और वहाँ सिक्किम के राष्ट्रीय फूल, लाल रंग के 'नोबिल टेनट्रोबियम' भी देखा। इस बाग के प्रवेश द्वारा पर सिक्किम का पूरा चरित्र अंकित है। पुराने ज़माने में सिक्किम का शासनभार चोग्याल राजाओं के हाथ में था। उनका शासन सन् 1987 तक रहा। बाग में घूमकर हम लोग वहाँ से बाहर निकले और सिक्किम के परंपरागत पोशाक पहनकर मैं ने बच्चों सहित फोटो खींचा। फिर दोपहर का खाना खाकर हम केबिल कार (Cable Car) पर चढ़े। यह यात्रा केवल पाँच मिनट की है। लेकिन उस पर खड़े होकर पूरे सिक्किम को देखा। सर्दी हमें सतानी लगी। हम गंगटोक के एम.जी.मार्ग पर टहलने निकले। यहाँ सड़क की एक ओर गाड़ियाँ चलती हैं तो दूसरी ओर लंबी-चौड़ी पैदल मार्ग (Foot Path) है। इसलिए साफ़ सड़क पर पैदल चल सकते हैं। भीड़ शोरगुल नहीं। लेकिन ठंड़ी धुएँवाली बर्फ़ सब कहीं दृश्य को ओझल बना देती है। पहरेदारी केलिए पुलीस है। यहाँ अपराध न होने के कारण पुलीस आराम पर है। अधिकार एवं पैसे का बहाव कम होने के कारण नियम का पालन होता है। इधर नेपाल, तिब्बत तथा चीन के लोग बहुतेरे हैं। इसलिए नेपाली, चीनी, बूटिया भाषाएँ प्रचार में है। सिक्किम की भाषा लाच्चा है। ड्रागन के पेंटिगवाले चीनी होटल बहुत हैं। एम.जी.मार्ग के फुटपाथ के लोहे के बेंच पर बैठकर बातें करनेवाले सिक्किमवाले मोम की मूर्ति के समान सुन्दर दीख पड़ते हैं।

अगले दिन नाश्ता के बाद हम लच्चूंग गये। वहाँ तापमान 4 ^{o}C है। सख्त सर्दी में ड्राइवर उदय ने उर्वरक, ढ़लान और खड़ी चढ़ाई पर गाड़ी चलायी। रास्ते पर झरने थे। लच्चूंग पहुँचने के पहले चेक पोस्ट पर हमारे हाथ के सभी प्लास्टिक चीज़ें छोड़नी पड़ीं और पानी के लिए वहाँ से बोतल खरीदे। लंबी यात्रा के उपरान्त शाम को 4.30 बजे लच्चूंग पहुँचकर वहाँ के एक तिब्बती हॉटल पर ठहरे। हड्डियों को तोड़नेवाला शैत्य। तिब्बतन शैली का वह हॉटल हमें एक अनोखी संस्कृति दिखाती है। सब कहीं सफ़ाई ही सफ़ाई है, धूल कहीं भी नहीं। दीवारों के चित्र सिक्किम की संस्कृति दिखाते हैं। बैठने की कुर्सी, डाइनिंग हॉल का फर्नीचर सब चित्रों से सजाये गये हैं। उस हॉटल

के नज़दीक एक बुद्ध सन्यासिनी की छोटी-सी दूकान है जो लकड़ी से बनायी गयी है। हम उस दूकान के अन्दर घुसे तब वहाँ गर्मी के लिए लोहे की एक समोवेर (Samover) रखा था। फल रस के साथ शराब के बोतल हैं। मदिरा पर राज्य का उत्पाद शुल्क कम है। चाय के साथ हमने सिक्किम का परंपरागत भोजन 'मोमो' भी खाया। मोमो रवा के आटे से बनाता है। नमक मिलाकर काबेज (Cabbage) और प्यास फोड़कर इस रवा के छोटे-छोटे टुकड़े के अन्दर भरकर उसे फोड़ते हैं। स्वादिष्ट गरम मोमो उधर के सॉस मिलाकर खाया। अगले दिन की यात्रा के लिए दस्ताने भी उस दूकान से खरीदे।

सुबह दस्ताने पहनकर पाँच बजे 'कठाओ' गये। यहाँ तड़के पर सूरज निकलता है। तापमान 5°C है। सवा पाँच का सूरज एक ओर सोने के रंग में है तो दूसरी ओर चाँदी का रंग दिखाता है। कठोआ में हमेशा भूस्खलन होता है। मौसम हर पल बदलता रहता है। जल्दी ही ओले की बारिश हुई। यह चैना-तिब्बत का भाग है। यह इलाका मराठा रेजिमेंट की देखरेख में है। सैनिक अड्ड़ा होने के कारण यहाँ पर फोटो खींचना मना है। सालों पहले बहुत पर्यटक भूस्खलन में पड़कर मरे थे। इसलिए सुरक्षावश सैनिकों ने हमें लौट जाने को कहा। रास्ते से नाश्ता करके हम सीधे 'यूतांग वाली' और 'सीरो पोलिंट' पर गये। हम बहुत ऊँचाई पर पहुँच गये तो ऐसा लगा कि मेघों के बीच में हैं। ओक्सिजन (Oxygen) की कमी होने के कारण मैं और बेटी उल्टी करने लगीं। हमने देखा कि वहाँ बहुतेरे हेलिपाड हैं। वहाँ से गुज़रती हरेक गाड़ी निरीक्षण कामेरा से ही जाती है। चारों ओर ITBP पहरा कर रहे हैं। गाड़ियों को धीमी गति से चलना है। सड़क नहीं है टूटे - फूटे पत्थर फैले पड़े हैं। सालों पहले हुई प्राकृतिक आपदा के कारण मकान जैसे ऊँची भारी पत्थर चार किलोमीटर तक बिखरे पड़े हैं। निर्जन प्रदेश है। यहाँ के पत्थर अवसादी चट्टानें (Sedimentary Rocks) हैं। इसलिए चमकीले हैं। हिमालय पर्वत की ऊँचाई, चौड़ाई, आकार सब सीमा के लिए कितनी ज़रूरत है इसका अहसास तभी हुआ। मन ही मन भारत के रक्षा कवच पर्वतराज हिमालय का नमन किया। वहाँ से हम सीरो पोयिंट पर पहुँचे। वहाँ चारों ओर सफ़ेद बर्फ़ के अलावा कुछ है ही नहीं। उस कड़ी सर्दी में हम सब उस गाड़ी से बाहर उतरकर बर्फ़ में खेलने लगे। खूब मस्ती लूटने के बाद फिर गंगटोक की ओर चले। रास्ते में बहुत याक (Yak) देखे। उस यात्रा में मैं बहुत थक गयी।

नये जोश के साथ अगले दिन हमने नाथुला पास हरभजनसिंह बाबा मंदिर और सोंगा सरोवर की ओर यात्रा की। पहले सीधे हम हरभजनसिंह बाबा मंदिर पर पहुँचे। यह मंदिर एक वीर जवान का स्मारक है। सन् 1960 के युद्ध में हरभजनसिंह नामक एक पंजाबी वीर जवान ने बर्फ़ में वीरगति प्राप्त की थी। उसी स्थान पर अभी कई सैनिक लोग उन्हें ज़िन्दा देख रहे हैं। वे अब भारतीय सैनिकों के रक्षक हैं। भारतीय सैनिक उन्हें बाबा कहकर श्रद्धा-भक्ति से पूजा- अर्चना करते आये हैं। मंदिर की पवित्रता, पूजा-पाठ, भक्ति सब यहाँ हैं। वहाँ घंटी बजने की आवाज़ मात्र सुन रही है। पूर्ण नीरवता है। प्रसाद के रूप में भारतीय सैनिकों ने हमें किशमिश दिये। बाबा के सम्मुख प्रार्थना करते वक्त देशभक्ति से मन भर

गया। असली बाबा मंदिर सैनिक शिविर पर है। वहाँ प्रवेश-निषेध है। प्रार्थना करके हम बाहर निकले तो ओले पड़ने लगे। सुरक्षावश सैनिक ज़ोर से चेतावनी देते रहे कि - 'मौसम ख़राब है, जल्दी जाओ, जल्दी जाओ'। वहाँ भूचाल या भूस्खलन की संभावनाएँ ज़्यादा हैं। सीमा की कड़ी सर्दी में, सतर्क पहरा देकर अपनी जान को बाज़ी में रखकर भारतीय सैनिक सदैव पहरा दे रहे हैं। इस बर्फ़ीली पहाड़ के उस पार चीन है। यहाँ सब कहीं धुँधुली बर्फ़ है। चालाक ड्राइवर उदय ने बहुत कोशिश करके धीरे-धीरे गाड़ी आगे चलाई।

बाबा मंदिर से हम सीधे नाथुला पास पहुँचे। कैलाश पर इसी मार्ग से जा सकते हैं। यह चैनीस सिल्क रूट का भाग है। चीन से चीज़ें इसी रास्ते से आती हैं। पूरा प्रदेश बर्फ़ीला है। यहाँ पर सुरक्षा का सख्त नियम चालू है। केवल उनके निर्देशानुसार ही हम गाड़ी चला सकते हैं। उस समय का तापमान $5^{o}C$ है। यात्रियों को खेलने की जगह भी बीच में मिली। वहाँ हम यथेष्ट बर्फ़ में खूब खेले। फिर हम लोग सोंगों सरोवर पर गये। यह सरोवर बर्फ़ के पिघलने से बनाया हुआ है। अपनी ज़िम्मेदारी से हम नौके पर चढ़ सकते हैं। सरोवर के चारों ओर सजाए हुए याकों से लोग खड़े थे। ओले पड़ने के कारण सैनिक लागों ने यहाँ से भी भगाना शुरू किया। मैं ने अपने बच्चों सहित याक के ऊपर चढ़कर तस्वीर खींची।

सिक्किम में बौद्ध धर्म के अनुयायी ज़्यादा हैं। हिन्दू धर्म के बाद 27.3% लोग बौद्ध धर्म के हैं। इसलिए यहाँ पर बहुत बुद्ध विहार हैं। 'रूमटेक मोनास्ट्री' (Rumtek Monastry) नामी एवं बहुत पुराना है। हम सन् 1980 में निर्मित एनची मोनास्ट्री (Enchey Monastry) पर पहुँचे। यह एक पुराना बुद्ध विहार है। सिक्किम के दसवें चोग्या ने इसका निर्माण किया। यहाँ फोटो खींचना मना है। इसके अन्दर महान श्रीबुद्ध की बहुत बड़ी मूर्ति है। पूरे कमरे पर बुद्ध की तस्वीर सहित कहानियाँ अंकित हैं। वहाँ घूमने के बाद गंगटोक वापस आकर हमने कुछ चीज़ें खरीदकर स्वादिष्ट रसमलाई पी लीं।

लौट आने के दिन मन भारी होने लगा। इतने दिन रहकर सिक्किम के सच्चे लोग, रंग - विरंगे दृश्य बर्फ सब छोड़कर हमें जाना ही है। गाड़ी लौटते वक्त सरकारी पर्यटन विभाग के प्रतिनिधि एवं यात्रा प्रबन्धक टेनसिंह ने हाथ जोड़कर हमें कृतज्ञता ज्ञापित की कि हमने उसके राज्य पर घूमने की मेहरबानी की है। उनका यह आदर हमारे मन को छू लेता है। ऐसा लगा कि हम मायके से विदा हो रहे हैं। सुनहली यादों को समेटकर साढ़े पाँच घंटे यात्रा करके हम बागड़ोगरा एयरपोर्ट पर पहुँचे। इसी साल नवंबर में सिक्किम के पाक्कियोंग में नया एयरपोर्ट आनेवाला है ऐसा हमें पता लगा। किन्तु माध्यमों से मुझे पता चला कि सितंबर 2018 में ही सुन्दरतम हवाई अड्डे का उद्घाटन वहाँ किया गया है तो आगे हमें साढ़े पाँच घंटे की यात्रा नहीं करनी पडेगी। आगामी यात्री आराम से सिक्किम यात्रा का रस लूटेंगे।

♦ असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, यूनिवेर्सिटी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम।
फोन: 9447743225

डॉ. जी. गोपिनाथन की अनूदित रचनाएँ

• विष्णु.आर.एस

कोई जन्म से महान होता है, कोई स्वयं अपनी प्रवृत्तियों से अपने को महान सिद्ध करता है। इनमें से दूसरे वर्ग को प्यार और प्रशंसा अधिक मात्रा में प्राप्त होती है। प्रो. डॉ.जी.गोपिनाथन इस श्रेणी में आते हैं।

प्रो. डॉ. गोपिनाथन जी बहुरूपी व्यक्तित्व के धनी हैं। वे सफल लेखक, अनुवादक, वाग्मी एवं आदर्श अध्यापक हैं। वे सच्चे आदर्शवादी हैं, साथ ही सच्चे प्रेमवाले व्यक्ति भी हैं। उनके साहित्य में ऊँचे आदर्शों-मूल्यों की भरमार है, जिसका उन्होंने अपने जीवन में भी हमेशा पालन किया। सन् 2016 में उन्होंने मीराबाई के गीतों को 'मीरयुटे गीतङ्ङल' नाम से मलयालम में अनूदित किया। इसमें भक्ति के साथ-साथ प्रेम भी शामिल है। गीतमयी भाषा इसका प्राणतत्व बन गया है।

'हिमयुगी चुट्टानें' नामक उपन्यास को प्रो. डॉ. गोपिनाथन जी ने अलग तरीके से सृजन किया। क्योंकि इसमें केरलीय जनता को अनभिज्ञ एक देश के वातावरण को मार्मिकता के साथ अंकित किया है। इसका सृजन फिनलाण्ड देश में हुआ था। प्रभावात्मक शैली में लेखक इस उपन्यास का सृजन किया है। पाठकों के मन में अड़िग रहनेवाले कथातंतु को स्वीकार करके सृजन करने की अद्भुत क्षमता उनमें विद्यमान है। यह उपन्यास उन्हींके 'हिमयुग प्यारकल' उपन्यास का अनुवाद है।

मलयालम के विख्यात साहित्यकार श्री.पी.के.बालकृष्णन का कालजयी एवं बहर्चर्चित उपन्यास है 'इनि ञान उरङ्ङट्टे'। इसका हिन्दी अनुवाद सन् 2016 में प्रो. डॉ. गोपिनाथन जी ने 'अब मैं सो जाऊँ' नाम से किया। 'महाभारत' पर आधारित उपन्यास को हिन्दी में अनुवाद करते समय कतई भी भाव नष्ट नहीं हुआ। मलयालम के बहुचर्चित इस उपन्यास को हिन्दी में भी प्रभावी एवं ओजमयी भाषा में अवतरित करने में प्रो. डॉ. गोपिनाथन जी सफल हुए हैं। उन्होंने महाभारत जैसे महान क्लासिक को उपन्यास की नई टेकनिक द्वारा अत्यंत रोमांचक, नाटकीय एवं काव्यात्मक रूप में हिन्दी में अनूदित किया है।

श्री.शिवरामकरांत की अमर रचना 'मृत्यु के बाद' को प्रो. डॉ. गोपिनाथन जी ने सन् 1977 में 'मरणत्तिनु शेषम' नाम से मलयालम नें अनूदित किया। इसके साथ-साथ 'निर्मलवर्मयुटे नीण्टकथकल', 'अघोर संप्रदायवुं शक्ति साधनयुं' आदि उनके चर्चित अनूदित रचनाएँ हैं। इन सभी अनूदित रचनाओं को पढ़ते वक्त हमें मालूम होता है कि प्रो.डॉ.जी.गोपिनाथन बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार हैं। उनकी अनूदित रचनाएँ गीत, उपन्यास, कहानी, दार्शनिक ग्रन्थ जैसी विविध विधाओं की हैं। मलयालम एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में

वे सिद्ध हस्त हैं। केरल के क्रांतिकारी संत एवं समाज सुधारक श्री नारायणगरु की कविताओं का हिन्दी अनुवाद भी सन् 2000 में उन्होंने किया।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रो.डॉ.जी.गोपिनाथन ने अपना संपूर्ण जीवन साहित्य सेवा में, खासकर हिन्दी की सेवा में लगा दिया है। रचना-क्षेत्र के इतने विस्तार और वैविद्य केरल के अन्य किसी साहित्यकार में शायद ही मिले। युवा पीढ़ी के लेखकों केलिए प्रो. डॉ. गोपिनाथन जी का रचनाशील व्यक्तित्व प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक है। उनकी अनूदित रचनाएँ गीत, उपन्यास, कहानी, दार्शनिक ग्रंथ जैसी विविध विधाओं की हैं।

प्रो.डॉ.जी.गोपिनाथन बहुभाषा पंडित हैं। वे कालीकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होने के बाद 'महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय', वर्धा के कुलपति बने।

'महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' विश्व हिन्दी सम्मेलन की देन है। सन् 1975 मे नागपुर (भारत) में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में एक हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना करने का संकल्प लिया गया था। उसके बाईस वर्ष बाद सन् 1997 में भारतीय संसद के विशेष अधिनियम क्रमांक 3 के अंतर्गत वर्धा में 'महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' की स्थापना की गयी। इस प्रकार से इस विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रमुख श्रेय 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' को है।

♦ शोध छात्र
हिन्दी विभाग, महात्मागाँधी कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम।
फोन:8907967364.

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.29 के आगे)

15.मॉरीशस में हिन्दी की आदि संस्था 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना किस नाम से हुई ?

(अ)हिन्दी प्रचार सभा (आ) माहात्मा गाँधी संस्थान

(इ) तिलक विद्यालय (ई) बैठका

सही उत्तर

1.(ई);	2.(ई);	3.(अ);	4.(इ);
5.(आ);	6.(इ);	7.(ई);	8.(आ);
9.(आ);	10.(इ);	11.(आ);	12.(अ);
13.(आ);	14.(इ);	15.(इ)	

श्रद्धांजली
अटल बिहारी वाजपेयी

अटल बिहारी वाजपेयी केवल स्वाधीन भारत के लोकप्रिय राजनेता ही नहीं थे, अपितु हिन्दी के लोकप्रिय कवि भी थे। उनकी कविता पुस्तकें 'कैदी कविराय की कुंड़लियाँ' तथा 'मेरी इक्कावन कवितायें' हिन्दी समाज में बहुपठित रही हैं। विष्णुकांत शास्त्री के निवेदन पर अटल जी ने अपनी कविताओं का पाठ भी किया था, जिसका कैसेट 'कुमार सभा पुस्तकालय' ने निकाला था।

अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जीवन में सर्वाधिक प्रसन्नता क क्षण 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में दिये अपने हिन्दी भाषण को बताया था। वाजपेयी जी का वह भाषण ऐतिहासिक था। 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में एक भारतीय द्वारा हिन्दी में भाषण देना पहली था। वह भाषण यहाँ अविकल प्रस्तुत है-

(शेष पृ.सं. 50)

श्रद्धांजली: डॉ.आर.एस.रामचन्द्रन नायर*

♦ डॉ.पी.लता

बहुभाषा पंडित, वाग्मी, लेखक, पत्रकार, हिन्दी प्राध्यापक तथा समर्पित हिन्दी सेवी डॉ.आर.एस.रामचन्द्रन नायर 07-09-2018 शुक्रवार को स्वर्गस्थ हुए। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व आदर्शनिष्ठ था। विविध क्षेत्रों में उनका सेवा-कार्य संक्षेप में इस प्रकार है-

उपनाम : तिरुमला चन्द्रन

शौक्षिक योग्यताएँ: एम. ए(हिन्दी), पी एच. डी (हिन्दी),एम. ए(अंग्रेज़ी),एम.ए. (मलयालम), पी. जी.डिप्लोमा इन जेर्नलिसम (स्वर्ण पदक विजेता, प्रेस क्लब, तिरुवनन्तपुरम), पी.जी. डिप्लोमा इन अड्वेर्टाइसिंग एण्ड पब्लिक रिलेशन्स, साहित्य, रत्न।

सेवा: अध्यापन वृत्ति (केरल के विविध सरकारी कॉलेजों में 28 वर्षों का अध्यापन परिचय); प्रोफेसर और अध्यक्ष पद (हिन्दी विभाग, यूनिवेर्सिटी कालेज) से सेवा- निवृत्त। केरल विश्वविद्यालय में पी एच. डी (हिन्दी) शोध कार्य के मार्ग दर्शक।

अन्य पद:

♦(भूतपूर्व) सदस्य, सेंट्रल ग्रान्ट्स कमिटी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय।

♦(पूर्व) सदस्य, बोर्ड आफ़ स्टड़ीस (पी. जी), केरल विश्वविद्यालय।

♦(पूर्व) सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।

♦(पूर्व) सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति; विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार।

♦(पूर्व) अध्यक्ष, एम. फिल परीक्षा बोर्ड, केरल विश्वविद्यालय।

♦अतिरिक्त निजी सचिव, परिवहन और वन मंत्री।

♦(पूर्व) सचिव, केरल पर्यटन अकादमी।

♦संस्थापक अध्यक्ष , राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, केरल।

पत्रकार:

♦(पूर्व) प्रधान संपादक, ओमेगा, हिन्दी मासिक।

♦(पूर्व) सह संपादक, नवकेरलम, मलयालम दैनिक।

♦(पूर्व) प्रधान संपादक, तेक्कन वार्ता, मलयालम दैनिक।

♦मुख्य संपादक, भारत पत्रिका, मलयालम दैनिक।

♦भारत पत्रिका (त्रिभाषा पत्रिका; अंग्रेज़ी-मलयालम-हिन्दी) के मुख्य संपादक।

केरल से नियमित रूप से निकलनेवाली एक पत्रिका है **'भारत पत्रिका'**। इसका प्रथम अंक जनवरी 2010 में निकला। यह त्रिभाषा (मलयालम-अंग्रेज़ी-हिन्दी) पत्रिका है। इसके संस्थापक संपादक तथा मृत्युपर्यंत मुख्य संपादक रहे प्रो.डॉ.तिरुमला चन्द्रन। यह

तिरुवनन्तपुरम जिले से निकल रही है। पता है – पुल्लमटम् कॉम्पउण्ड, फोर्ट पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - 23। पहले यह त्रैमासिक पत्रिका थी, अब मासिक है।

लेखन- कार्यः

प्रकाशित आलोचना ग्रंथ हैं- (1) मार्क्स और लेनिन का सौन्दर्यशास्त्र (1990 ; प्रकाशक : डॉ.तिरुमला चन्द्रन, पी.टी.पी.नगर, तिरुवनन्तपुरम), (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और प्रो. जोसफ मुण्टश्शेरी के समीक्षा सिद्धांत (1994; प्रकाशक : शोध संस्थान, वाराणसी) - दूसरे ग्रंथ में हिन्दी और मलयालम के मूर्द्धन्य आलोचकों के सिद्धांत तुलना केलिए चुने गये हैं। दोनों रचनाएँ तुलनात्मक साहित्य को विशिष्ट देन हैं। अन्य प्रकाशित रचनाएँ हैं- 'विरलुकल' (अंगुलियाँ)-मलयालम कविता - संकलन;'कल्ल दैवङ्ङल' (झूठे देवता), मलयालम नाटक ;'व्यावहारिक हिन्दी' (साहित्येतर रचना) आदि।

पुरस्कारः

चन्द्रनजी पुरस्कारों के पीछे पड़नेवाले नहीं थे। फिर भी कुछ पुरस्कार उपलब्ध हुए, जैसे-

♦ प्रेमचन्द लेखक पुरस्कार (महाराष्ट्र दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रदत्त)।

♦ समग्र हिन्दी सेवा केलिए पुरस्कार (राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, मीरट)।

♦ राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन पुरस्कार (इलाहबाद)।

परिवार :

एस.के.चन्द्रकुमारी (पत्नी), दो बेटे - अनुचन्द्रन (पोंटिच्चेरी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक) और विनु चन्द्रन (सोफ्टवेयर इंजीनियर)। दोनों बेटे विवाहित हैं।

साक्षात्कारः-

तिरुमला चन्द्रनजी द्वारा निकाली गयी 'ओमेगा' हिन्दी पत्रिका के बारे में सन् 2008 में डॉ.पी.लता का उनसे संवागद हुआ, जो इस प्रकार है-

1.'ओमेगा' शब्द का अर्थ क्या है? पत्रिका का प्रस्तुत नाम किसका सुझाव है? यही नाम देने का कारण क्या है?

'ओमेगा' ग्रीक भाषा का अंतिम वर्ण है। आप जानते हैं कि आल्फा ग्रीक वर्णमाला का पहला वर्ण है। आल्फा और ओमेगा मामूली शब्द - प्रयोग हैं। पत्रिका को ओमेगा नाम स्वर्गीय लेफ्टनेंट केर्नल एस.वी.के. नायर ने सुझा दिया, जो उस समय 'राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष थे। नव लेखकों को साहित्य के क्षेत्र में लाना, उन्हें प्रोत्साहन और उचित दिशा - निर्देश देना, यही ओमेगा के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य था।

2. 'ओमेगा' का पहला अंक कब निकला? उसके कितने अंक प्रकाशित हुए? इसका प्रकाशन बंद होने का कोई खास कारण है?

1990 के मध्य में ओमेगाका प्रकाशन शुरू हुआ। करीब दो वर्ष तक प्रकाशित हुई। वित्तीय कठिनाइयों के कारण प्रकाशन ज़ारी न रह सका।

3. 'ओमेगा' पत्रिका के मुख पृष्ठ के बारे में कहिए?

मुख पृष्ठ स्थायी था। एक चित्रकार से डिज़ाइन किया गया।

4. 'ओमेगा'पत्रिका का प्रकाशन रुक जाने पर आपका मनोभाव क्या था?

डॉ. जे. रामचन्द्रन नायर और मैं ओमेगा पत्रिका के प्रकाशन का कार्य करते थे। उन दिनों हम दोनों कॉलेज के अध्यापन - कार्य में जुड़े थे, इसलिए पत्रिका के प्रकाशन केलिए आवश्यक धन जुटा नहीं सकते थे। लेकिन हम कह सकते हैं कि हम कुछ युवा लेखकों को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में ला सके। यह भी सच है कि वे बाद में श्रेष्ठ लेखक भी बने।

5. केरल में हिन्दी पत्रकारिता की उपलब्धियों के संबन्ध में आपका मत क्या है?

युवा प्रतिभाओं के विकास में केरल की वर्तमान हिन्दी पत्रिकाएँ मुख्य भूमिका निभाती हैं। लेकिन यह निराशाजनक है कि मौलिक चिन्तन तथा गहरी अंतर्दृष्टि विरले ही लेखकों में दिखाई पड़ती हैं।

6. केरल में हिन्दी पत्रकारिता की संभावनाओं पर आपके विचार क्या - क्या हैं?

केरल में हिन्दी पत्रकारिता के विकास में राज्य सरकार या केन्द्र सरकार की ओर से गंभीरतापूर्वक कोई प्रयत्न नहीं किया जाता है। केन्द्र सरकार कुछ हिन्दी पत्रिकाओं को अनुदान अवश्य देती है। किन्तु यह पर्याप्त नहीं है। राज्य सरकार को आगे आना चाहिए और हिन्दी पत्रकारिता के विकास में कोई योजना शुरू करनी चाहिए। हम एक रूखी या निराशाजनक स्थिति का सामना कर रहे हैं।

7. आपकी राय में केरल में एक हिन्दी दैनिक प्रकाशित हो जाए तो उसका भविष्य क्या होगा?

संप्रति केरल में एक हिन्दी दैनिक की गुंजाइश नहीं है। क्योंकि वह तो बहु करोड़ रुपये का उद्योग है। अनेकों चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। यही नहीं, केरल में हिन्दी दैनिकों के ज़्यादा ग्राहक भी नहीं मिलेंगे। समय की माँग है कि जन साधारण में हिन्दी में कार्यान्वयन को मज़बूत करना।

8. 'ओमेगा' पत्रिका फिर से निकालने की कुछ संकल्पना है?

ओमेगा नहीं, हम एक साहित्यिक मासिक पत्रिका निकालने के बारे में सोचते हैं।

9. ओमेगा पत्रिका में प्रकाशनार्थ सामग्री का चयन करते समय आप किन - किन बातों पर ध्यान देते थे?

ओमेगा पत्रिका नवलेखकों केलिए प्रकाशित की गयी थी । प्रकाशन केलिए मिली सभी रचनाएँ, मूल्यवान न होने पर भी हमने उन्हें यथा संभव प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

विश्व हिन्दी सम्मान विजेता (केरल)

डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर (प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर)

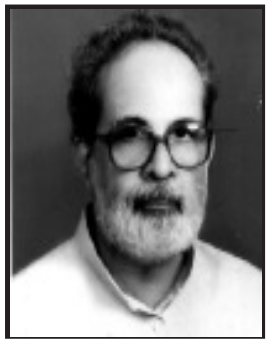

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन, दिल्ली)

(शेष पृ.सं. 49)

भारत भारती के समर्पित हिन्दी साधक

पुस्तक - परिचय :

♦ डॉ.पी.लता

कर्मयोगी आचार्य रवीन्द्रनाथ मेहरोत्रा (ग्वालियर, मध्यप्रदेश) पर तैयार किये गये 'भारत भारती के समर्पित हिन्दी साधक' ग्रंथ के संपादक हैं डॉ.रंजीत.आर.एस.रविशैलम। प्रकाशक है 'रविशैलम प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम'। सन् 2017 में प्रकाशित इस ग्रंथ के संपादक रंजीतजी खुद एक कवि भी होने के कारण इस ग्रंथ की विषय प्रस्तुति में विशेष सौन्दर्य आद्यंत महसूस होता है। यही नहीं, यह ग्रंथ महापुरुष आचार्य मेहरोत्रा पर लिखी गयी सामग्रियों का संचय होने के कारण प्रबुद्ध पाठकों को ग्रंथ-पठन के बाद किसी तीर्थ-दर्शन से निवर्तित होने की अनुभूति भी होती है।

416 पृष्ठोंवाला यह बृहत् ग्रंथ पाठकों को क्या-क्या देता है? यह ग्रंथ मेहरोत्राजी की ज़िन्दगी के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालता है। कर्मठ साधक मेहरोत्राजी हिन्दी सेवा के ज़रिए राष्ट्रसेवा ही कर रहे हैं। कर्मचारी, साहित्य सेवी, कुटुंबी, कृषक, समाज सेवी जैसे बहुआयामी व्यक्तियों के धनी मेहरोत्राजी की ज़िन्दगी के सभी पहलुओं में कदम-कमद पर ईश्वरीय कृपा बरसते रहने से वे शांत चित्त होकर कर्मपथ पर अग्रसर होते रहे, कामयाब भी होते रहे।

भारतीय संस्कृति के प्रति उनका श्रद्धाभाव, उनकी देशभक्ति, राष्ट्रप्रेमी हिन्दी प्रेमियों के प्रति उनका सम्मान भाव, खेती के महत्व को मनसा स्वीकृति आदि विशेषताएँ उनकी प्रकाशित रचनाओं में परिलक्षित होती हैं। उनकी प्रकाशित समग्र रचनाओं की जानकारी 'भारत भारती के समर्पित हिन्दी साधक' ग्रंथ से भी पाठकों को मिलती है।

'राष्ट्रीय जागरण में स्वामी विवेकानन्द का योगदान' जिसका लोकार्पण न्यूयोर्क में संपन्न आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में हुआ, श्रृंखलाबद्ध प्रकाशित होनेवाला 'हिन्दी विश्व गौरव-ग्रंथ'(जिसके 5 भाग लोकार्पित हो चुके हैं), 'विश्व व्यापी हिन्दी' (प्रथम भाग) आदि उनके प्रकाशित ग्रंथ हैं, जो भारत के सांस्कृतिक महापुरुष स्वामी विवेकानन्द, विश्व भाषा के रूप में 'हिन्दी', विश्व हिन्दी सम्मेलन जैसे विविध विषयों के संदर्भ ग्रंथों के रूप में अध्येता काम में ला सके।

इस ग्रंथ की पृष्ठ संख्या 393 से 416 तक 'चित्रावली : अतीत से अध्ययन' शीर्षक के अंतर्गत दिये गये मेहरोत्राजी की जीवित यात्रा के विविध छायाचित्रों तथा छायाचित्रों के अधोलेखों के ज़रिए भारत भारती के समर्पित हिन्दी साधक आचार्य रवीन्द्रनाथ मेहरोत्रा की संक्षिप्त जीवनी ही प्रस्तुत की गयी है। मेहरोत्राजी पर तथा उनके

प्रकाशित ग्रंथों पर गद्य-पद्य रूपों में विविध विद्वानों के मत, मेहरोत्राजी से संपादक रंजीतजी के साक्षात्कार आदि ग्रंथ को चार चाँद लगानेवाली बातें हैं। साहित्य साधक आचार्य मेहरोत्राजी द्वारा भारत माता पर 'पुनः जागा है भारत हमारा' तथा राष्ट्रभाषा, प्रयोजनमूलक भाषा तथा विश्वभाषा हिन्दी पर 'कहो गर्व से हमारी है हिन्दी' नामों से लिखी गयी दो हिन्दी कविताओं का विविध विद्वानों द्वारा विभिन्न भाषाओं – संस्कृत, काश्मीरी, डोगरी, उर्दू, सिन्धी, कुमाऊनी (उत्तराखंड की भाषा), पंजाबी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलगु, उड़िया, बंगला, निशी (उत्तरांचल की भाषा), बोड़ो (असम की भाषा), नागामिज़ (नागालैंण्ड की भाषा), मिज़ो (मिज़ोराम की भाषा) कालवरोक (त्रिपुरा की भाषा), नेपाली, अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, क्रियोल (मॉरीशस) आदि - में किया गया अनुवाद इस ग्रंथ में पृष्ठ संख्या 90 से 143 तक समाविष्ट है, जो इस ग्रंथ की गरिमा बढ़ाता है, आचार्य मेहरोत्राजी को और भी गौरवान्वित बनाता है तथा संपादक डॉ.रंजित रविशैलम की संपादन कला का प्रमाण भी पाठकों को मिलता है।

♦ मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी
(पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
सरकारी महिला महाविद्यालय)
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।
फोन : 9946253648

(पृ.सं.47 के आगे)

विश्व हिन्दी सम्मान विजेता (केरल)

डॉ.एस.तंकमणि अम्मा
(सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, सूरीनाम)

डॉ.ए.अरविन्दाक्षन
(आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, न्यूयोर्क)

डॉ.वनजा.के
(नवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, जोहन्नासबर्ग)

डॉ.के.सी.अजयकुमार
(ग्यारहवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन, मॉरीशस)

(पृ.सं.44 के आगे)

अटल बिहारी वाजपेयी

"सरकार की बागडोर संभाले केवल छह महीने हुए हैं। फिर भी इतने कम समय में हमारी उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। भारत में मूलभूत मानवाधिकार पुनः प्रतिष्ठित हो गये हैं। जिस भय और आतंक के वातावरण ने हमारे लोगों को घेर लिया था, वह अब खतम हो गया है। ऐसे संवैधानिक कदम उठाए जा रहे हैं कि यह सुनिश्चित हो जाए कि लोकतंत्र और बुनियादी आज़ादी का अब फिर कभी हनन नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय, वसुधैव कुटुंबकम की परिकल्पना बहुत पुरानी है। भारत मे सदा से हमारी इस धारणा में विश्वास रहा है कि सारा संसार एक परिवार है। अनेकानेक प्रयत्नों और कष्टों के बाद संयुक्त राष्ट्र के रूप में इस स्वप्न के साकार होने की संभावना है। यहाँ मैं राष्ट्रों की सत्ता और महत्ता के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। आम आदमी की प्रतिष्ठा और प्रगति मेरे लिए कहीं महत्व रखती हैं।

अंततः हमारी सफलताएँ और असफलताएँ केवल एक ही मापदंड से मापी जानी चाहिए कि क्या हम पूरे मानव समाज, वस्तुतः हर नर-नारी और बालक के लिए न्याय और गरिमा की आश्वस्ति देने में प्रयत्नशील हैं। अफ्रीका में चुनौती स्पष्ट है। प्रश्न यह है कि किसी जनता को स्वतंत्रता और सम्मान के साथ रहने का अनपरणीय अधिकार है या रंगभेद में विश्वास रखनेवाला अल्पमत और किसी विशाल बहुमत पर हमेशा अन्याय और दमन करता रहेगा। निःसंदेह रंगभेद के सभी रूपों का जड़ से उन्मूलन होना चाहिए।

हाल में इज़राइल ने वेस्ट बैंक को गाजा में नयी बस्तियाँ बसाकर अधिकृत क्षेत्रों मे जनसंख्या परिवर्तन करने का जो प्रयत्न किया है, संयुक्त राष्ट्र को उसे पूरी तरह अस्वीकार और रद्द कर देना चाहिए। यदि इन समस्याओं का संतोषजनक और शीघ्र ही समाधान नहीं होता इसके दुष्परिणाम क्षेत्र के बाहर भी फैल सकते हैं। यह अति आवश्यक है कि जेनेवा सम्मेलन का शीघ्र ही पुनः आयोजन किया जाये और उसमें पी एल ओ को प्रतिनिधित्व दिया जाए। अध्यक्ष महोदय, भारत सब देशों से मैत्री चाहता है और किसी पर प्रभुत्व स्थापित नहीं करना चाहता।

भारत न तो आणविक शस्त्र शक्ति है और न बनना ही चाहता है। नयी सरकार ने अपने संदिग्ध शब्दों में इस बात की पुनर्घोषणा की है। हमारी कार्यसूची का एक सर्वस्पर्शी विषय जो आगामी अनेक वर्षों और दशकों में बना रहेगा वह है मानव का भविष्य। मैं भारत की ओर से इस महा सभा को आश्वासन देना चाहता हूँ कि हम एक विश्व के आदर्शों की प्राप्ति और मानव के कल्याण तथा उसके गौरव के लिए त्याग और बलिदान की वेला में कभी पीछे नहीं रहेंगे। जय जगत, जय भारत!"

हिन्दी स्नेही राष्ट्र नेता वाजपेयीजी 16-08-2018 को स्वर्गस्थ हुए।

मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ.पी.लता, आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम -14 द्वारा अबी प्रकाशन एन्ड प्री-प्रेस, करुमम्, तिरुवनन्तपुरम -2 में मुद्रित तथा डॉ.पी.लता द्वारा संपादित
Printed & Published by Dr.P.Letha, Arathi, T.C. 14/1592, Forest Office Lane, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram -14,
Printed at Abi Design & Pre-Press, Karumom, Thiruvananthapuram -2 & Edited by Dr. P. Letha